الجزء ٢٢

وَ مَنْ يَّقْنُتْ مِنْكُنَّ لِلّٰهِ وَ
رَسُوْلِهٖ وَ تَعْمَلْ صَالِحًا نُّؤْتِهَآ
اَجْرَهَا مَرَّتَيْنِ ۙ وَ اَعْتَدْنَا لَهَا
رِزْقًا كَرِيْمًا ﴿٣١﴾

31. और तुम में से जो अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) की इताअ़त गुज़ार रहीं और नेक आ'माल करती रहीं तो हम उनका सवाब (भी) उन्हें दोगुना देंगे और हमने उनके लिए (जन्नत में) बा इ़ज़्ज़त रिज़्क़ तैयार कर रखा है।

يٰنِسَآءَ النَّبِيِّ لَسْتُنَّ كَاَحَدٍ مِّنَ
النِّسَآءِ اِنِ اتَّقَيْتُنَّ فَلَا تَخْضَعْنَ
بِالْقَوْلِ فَيَطْمَعَ الَّذِيْ فِيْ قَلْبِهٖ
مَرَضٌ وَّ قُلْنَ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ﴿٣٢﴾

32. ऐ अज़्वाजे पयग़म्बर ! तुम औ़रतों में से किसी एक की भी मिस्ल नहीं हो, अगर तुम परहेज़गार रेहना चाहती हो तो (मर्दों से ह़स्बे ज़रूरत) बात करने में नर्म लेहजा इख़्तियार न करना कि जिसके दिलमें (निफ़ाक़ की) बीमारी है (कहीं) वोह लालच करने लगे और (हमेशा) शक और लचक से मह़फ़ूज़ बात करना।

وَ قَرْنَ فِيْ بُيُوْتِكُنَّ وَ لَا تَبَرَّجْنَ
تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْاُوْلٰى وَ اَقِمْنَ
الصَّلٰوةَ وَ اٰتِيْنَ الزَّكٰوةَ وَ اَطِعْنَ
اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ ؕ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ
لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ اَهْلَ
الْبَيْتِ وَ يُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيْرًا ﴿٣٣﴾

33. और अपने घरों में सुकून से क़ियाम पज़ीर रेहना और पुरानी जाहिलिय्यत की तरह़ ज़ेबो ज़ीनत का इज़्हार मत करना, और नमाज़ क़ाइम रखना और ज़कात देते रेहना और अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) की इताअ़त गुज़ारी में रेहना, बस अल्लाह येही चाहता है कि ऐ (रसूल ﷺ के) अह्ले बैत ! तुमसे हर क़िस्म के गुनाह का मेल (और शक्को नक़्स की गर्द तक) दूर कर दे और तुम्हें (कामिल) तहारत से नवाज़ कर बिल्कुल पाक साफ़ कर दे।

وَ اذْكُرْنَ مَا يُتْلٰى فِيْ بُيُوْتِكُنَّ مِنْ
اٰيٰتِ اللّٰهِ وَ الْحِكْمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ
كَانَ لَطِيْفًا خَبِيْرًا ﴿٣٤﴾ ع

34. और तुम अल्लाहकी आयतों को और (रसूल ﷺ की) सुन्नतो हिक्मत को जिनकी तुम्हारे घरों में तिलावत की जाती है याद रखा करो, बेशक अल्लाह (अपने अवलिया के लिए) साहि़बे लुत्फ़ (और सारी मख़्लूक़ के लिए) ख़बरदार है।

اِنَّ الْمُسْلِمِيْنَ وَ الْمُسْلِمٰتِ
وَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ الْمُؤْمِنٰتِ وَ الْقٰنِتِيْنَ

35. बेशक मुसलमान मर्द और मुसलमान औ़रतें, और मोमिन मर्द और मोमिन औ़रतें, और फ़रमांबरदार मर्द

وَالْقٰنِتٰتِ وَالصّٰدِقِيْنَ وَالصّٰدِقٰتِ
وَالصّٰبِرِيْنَ وَالصّٰبِرٰتِ وَالْخٰشِعِيْنَ
وَالْخٰشِعٰتِ وَالْمُتَصَدِّقِيْنَ وَالْمُتَصَدِّقٰتِ
وَالصَّآئِمِيْنَ وَالصّٰٓئِمٰتِ وَالْحٰفِظِيْنَ
فُرُوْجَهُمْ وَالْحٰفِظٰتِ وَ الذّٰكِرِيْنَ
اللّٰهَ كَثِيْرًا وَّ الذّٰكِرٰتِ ۙ اَعَدَّ اللّٰهُ
لَهُمْ مَّغْفِرَةً وَّ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٣٥﴾
وَ مَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَّ لَا مُؤْمِنَةٍ اِذَا
قَضَى اللّٰهُ وَ رَسُوْلُهٗٓ اَمْرًا اَنْ
يَّكُوْنَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ اَمْرِهِمْ ؕ
وَ مَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ فَقَدْ
ضَلَّ ضَلٰلًا مُّبِيْنًا ﴿٣٦﴾ ؕ
وَ اِذْ تَقُوْلُ لِلَّذِيْٓ اَنْعَمَ اللّٰهُ
عَلَيْهِ وَاَنْعَمْتَ عَلَيْهِ اَمْسِكْ
عَلَيْكَ زَوْجَكَ وَاتَّقِ اللّٰهَ وَتُخْفِيْ
فِيْ نَفْسِكَ مَا اللّٰهُ مُبْدِيْهِ وَ
تَخْشَى النَّاسَ ۚ وَاللّٰهُ اَحَقُّ اَنْ
تَخْشٰىهُ ؕ فَلَمَّا قَضٰى زَيْدٌ مِّنْهَا

और फ़रमांबरदार औ़रतें, और सिद्क़वाले मर्द और सिद्क़वाली औरतें, और सब्रवाले मर्द और सब्रवाली औ़रतें और आ़जिज़ीवाले मर्द और आ़जिज़ीवाली औरतें, और सदक़ा व ख़ैरात करनेवाले मर्द और सदक़ा व ख़ैरात करनेवाली औ़रतें और रोज़ादार मर्द और रोज़ादार औ़रतें, और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करनेवाले मर्द और हिफ़ाज़त करनेवाली औ़रतें, और कसरत से अल्लाह का ज़िक्र करनेवाले मर्द और ज़िक्र करनेवाली औ़रतें, अल्लाह ने इन सब के लिए बख़्शिश और अ़ज़ीम अज्र तैयार फ़रमा रखा है।

36. और न किसी मोमिन मर्द को (येह) हक़ हासिल है और न किसी मोमिन औ़रतको कि जब अल्लाह और उसका रसूल (ﷺ) किसी काम का फ़ैसला (या हुक्म) फ़रमा दें तो उनके लिए अपने (उस) काम में (करने या न करने का) कोई इख़्तियार हो, और जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) की ना फ़रमानी करता है तो वोह यक़ीनन खुली गुमराही में भटक गया।

37. और (ऐ हबीब!) याद कीजिए जब आपने उस शख़्स से फ़रमाया जिस पर अल्लाहने इन्आ़म फ़रमाया था और उस पर आपने (भी) इन्आ़म फ़रमाया था कि तू अपनी बीवी (ज़ैनब) को अपनी ज़ौजिय्यत में रोके रख और अल्लाह से डर और आप अपने दिल में वोह बात ★पोशीदा रख रहे थे जिसे अल्लाह ज़ाहिर फ़रमानेवाला था और आप (दिलमें हयाअन) लोगों (की ता'ना ज़नी) का ख़ौफ़ रखते थे। (ऐ हबीब ! लोगों को ख़ातिर में लाने की कोई ज़रूरत न थी) और फ़क़त अल्लाह ही ज़ियादह

★(कि ज़ैनब की तुम्हारे साथ मुसालेहत न हो सकेगी और मन्शाए एज़दी के तहत वोह तलाक़ के बाद अज़वाजे मुतह्हरात में दाख़िल होंगी)

وَطَرًا زَوَّجْنٰكَهَا لِكَيْ لَا يَكُوْنَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ حَرَجٌ فِيْٓ اَزْوَاجِ اَدْعِيَآئِهِمْ اِذَا قَضَوْا مِنْهُنَّ وَطَرًا ؕ وَكَانَ اَمْرُ اللّٰهِ مَفْعُوْلًا ﴿۳۷﴾

हक़दार है किआप उसका ख़ौफ़ रखें (और वोह आप से बढ़ कर किस में है?) फिर जब (आपके मु-त-बन्ना) ज़ैदने उसे तलाक़ देनेकी ग़रज़ पूरी कर ली, तो हमने उससे आपका निकाह़ कर दिया ताकि मोमिनों पर उनके मुंह बोले बेटोंकी बीवियों (के साथ निकाह़) के बारे में कोई ह़रज न रहे जब कि (तलाक़ दे कर) वोह उनसे बे ग़रज़ हो गए हों, और अल्लाह का हुक्म तो पूरा किया जानेवाला ही था।

مَا كَانَ عَلَى النَّبِيِّ مِنْ حَرَجٍ فِيْمَا فَرَضَ اللّٰهُ لَهٗ ؕ سُنَّةَ اللّٰهِ فِي الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ ؕ وَكَانَ اَمْرُ اللّٰهِ قَدَرًا مَّقْدُوْرَا ۙ﴿۳۸﴾

38. और नबी (ﷺ) पर उस काम (की अंजाम दही) में कोई ह़रज नहीं है जो अल्लाह ने उनके लिए फ़र्ज़ फ़रमा दिया है, अल्लाह का येही तरीक़ा-व-दस्तूर उन लोगों में (भी रहा) है जो पहले गुज़र चुके, और अल्लाह का हुक्म फ़ैसला है जो पूरा हो चुका।

الَّذِيْنَ يُبَلِّغُوْنَ رِسٰلٰتِ اللّٰهِ وَيَخْشَوْنَهٗ وَلَا يَخْشَوْنَ اَحَدًا اِلَّا اللّٰهَ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ حَسِيْبًا ﴿۳۹﴾

39. वोह (पहले) लोग अल्लाह के पैग़ामात पहुंचाते थे और उसका ख़ौफ़ रखते थे और अल्लाहके सिवा किसी से नहीं डरते थे, और अल्लाह ह़िसाब लेनेवाला काफ़ी है।

مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَآ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ﴿۴۰﴾ ع ۵ ۶ ۲

40. मुह़म्मद (ﷺ) तुम्हारे मर्दों में से किसी के बाप नहीं हैं लेकिन वोह अल्लाह के रसूल हैं और सब अंबिया के आख़िर में (सिल्सिलए नुबुव्वत ख़त्म करनेवाले) हैं, और अल्लाह हर चीज़ का ख़ूब इल्म रखनेवाला है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوا اللّٰهَ ذِكْرًا كَثِيْرًا ۙ﴿۴۱﴾

41. ऐ ईमानवालो ! तुम अल्लाह का कसरत से ज़िक्र किया करो।

وَّسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ﴿۴۲﴾

42. और सुब्ह़ो शाम उसकी तस्बीह़ किया करो।

هُوَ الَّذِيْ يُصَلِّيْ عَلَيْكُمْ وَ

43. वोही है जो तुम पर दुरूद भेजता है और उसके फ़रिश्ते

مَلٰٓئِكَتُهٗ لِيُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ؕ وَ كَانَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَحِيْمًا ﴿۴۳﴾

भी, ताकि तुम्हें अँधेरों से निकाल कर नूर की तरफ़ ले जाए, और वोह मोमिनों पर बड़ी महरबानी फ़रमानेवाला है।

تَحِيَّتُهُمْ يَوْمَ يَلْقَوْنَهٗ سَلٰمٌ ۚۖ وَ اَعَدَّ لَهُمْ اَجْرًا كَرِيْمًا ﴿۴۴﴾

44. जिस दिन वोह (मोमिन) उससे मुलाक़ात करेंगे तो उन (की मुलाक़ात) का तोह़फ़ा सलाम होगा, और उसने उनके लिए बड़ी अ़ज़मतवाला अज्र तैयार कर रखा है।

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اِنَّاۤ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّ مُبَشِّرًا وَّ نَذِيْرًا ۙ﴿۴۵﴾

45. ऐ नबिय्ये (मुकर्रम!) बेशक हमने आपको (ह़क़ और ख़ल्क़ का) मुशाहिदा करनेवाला और (हुस्ने आख़िरत की) ख़ुशख़बरी देनेवाला और (अ़ज़ाबे आख़िरत का) डर सुनानेवाला बना कर भेजा है।

وَّ دَاعِيًا اِلَى اللّٰهِ بِاِذْنِهٖ وَ سِرَاجًا مُّنِيْرًا ﴿۴۶﴾

46. और उसके इज़्न से अल्लाह की तरफ़ दा'वत देने वाला और मुनव्वर करनेवाला आफ़्ताब (बना कर भेजा है)।

وَ بَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ بِاَنَّ لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ فَضْلًا كَبِيْرًا ﴿۴۷﴾

47. और अह्ले ईमान को इस बातकी बशारत दे दें कि उनके लिए अल्लाह का बड़ा फ़ज़्ल है। (कि वोह उस ख़ातिमुल अंबिया की निस्बते ग़ुलामी में हैं)।

وَ لَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَ الْمُنٰفِقِيْنَ وَ دَعْ اَذٰىهُمْ وَ تَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ وَ كَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿۴۸﴾

48. और आप काफ़िरों और मुनाफ़िकों का (येह) केहना (कि हमारे साथ मज़हबी समझौता कर लें हरगिज़) न मानें और उन की ईज़ा रसानी से दर गुज़र फ़रमाएं, और अल्लाह पर भरोसा (जारी) रखें, और अल्लाह ही (ह़क़्को बातिल की मा'रेका आराई में) काफ़ी कारसाज़ है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا نَكَحْتُمُ الْمُؤْمِنٰتِ ثُمَّ طَلَّقْتُمُوْهُنَّ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَمَسُّوْهُنَّ فَمَا لَكُمْ

49. ऐ ईमानवालो ! जब तुम मोमिन औ़रतों से निकाह़ करो फिर तुम उन्हें तलाक़ दे दो क़ब्ल इसके कि तुम उन्हें मस करो (या'नी ख़िल्वते सह़ीह़ा करो) तो तुम्हारे लिए उन पर कोई इद्दत (वाजिब) नहीं है कि तुम उसे शुमार

عَلَيْهِنَّ مِنْ عِدَّةٍ تَعْتَدُّوْنَهَا ۚ فَمَتِّعُوْهُنَّ وَسَرِّحُوْهُنَّ سَرَاحًا جَمِيْلًا ﴿٤٩﴾

करने लगो, पस उन्हें कुछ मालो मताअ़ दो और उन्हें अच्छी तरह हुस्ने सुलूक के साथ रुख़्सत करो।

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ اِنَّاۤ اَحْلَلْنَا لَكَ اَزْوَاجَكَ الّٰتِيْۤ اٰتَيْتَ اُجُوْرَهُنَّ وَمَا مَلَكَتْ يَمِيْنُكَ مِمَّاۤ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلَيْكَ وَبَنٰتِ عَمِّكَ وَبَنٰتِ عَمّٰتِكَ وَبَنٰتِ خَالِكَ وَبَنٰتِ خٰلٰتِكَ الّٰتِيْ هَاجَرْنَ مَعَكَ ۫ وَامْرَاَةً مُّؤْمِنَةً اِنْ وَّهَبَتْ نَفْسَهَا لِلنَّبِيِّ اِنْ اَرَادَ النَّبِيُّ اَنْ يَّسْتَنْكِحَهَا ۗ خَالِصَةً لَّكَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ؕ قَدْ عَلِمْنَا مَا فَرَضْنَا عَلَيْهِمْ فِيْۤ اَزْوَاجِهِمْ وَمَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ لِكَيْلَا يَكُوْنَ عَلَيْكَ حَرَجٌ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٥٠﴾

50. ऐ नबी ! बेशक हमने आपके लिए आपकी वोह बीवियां ह़लाल फ़रमा दी हैं जिनका महर आपने अदा फ़रमा दिया है और जो (अह्कामे इलाही के मुताबिक़) आपकी ममलूक हैं, जो अल्लाहने आपको माले ग़नीमत में अ़ता फ़रमाई हैं, और आपके चचा की बेटियां, और आपकी फूफियों की बेटियां, और आपके मामूं की बेटियां, और आपकी ख़ालाओंकी बेटियां, जिन्होंने आपके साथ हिजरत की है और कोई भी मोमिना औ़रत बशर्ते कि वोह अपने आपको नबी (ﷺ के निकाह़) के लिए दे दे और नबी (ﷺ भी) उसे अपने निकाह़ में लेनेका इरादा फ़रमाएं (तो येह सब आपके लिए ह़लाल हैं), (येह हुक्म) सिर्फ़ आपके लिए ख़ास है (उम्मत के) मोमिनों के लिए नहीं, वाक़ई हमें मा'लूम है जो कुछ हमने उन (मुसलमानों) पर उनकी बीवियों और उनकी ममलूका बांदियों के बारे में फ़र्ज़ किया है, (मगर आपके ह़क़में तअ़ह़ुदे अज़्वाज की ह़िल्लत का ख़ुसूसी हुक्म इस लिए है) ताकि आप पर (उम्मत में ता'लीमो तरबिय्यते निस्वां के वसीअ़ इन्तिज़ाम में) कोई तंगी न रहे, और अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला बड़ा रहम फ़रमानेवाला है।

تُرْجِيْ مَنْ تَشَآءُ مِنْهُنَّ وَتُـْٔوِيْۤ اِلَيْكَ مَنْ تَشَآءُ ؕ وَمَنِ ابْتَغَيْتَ مِمَّنْ عَزَلْتَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكَ ؕ

51. (ऐ ह़बीब ! आपको इख़्तियार है) उनमें से जिस (ज़ौजा) को चाहें (बारी में) मुअख़्ख़र रखें और जिसे चाहें अपने पास (पहले) जगह दें, और जिनसे आपने

ذٰلِكَ اَدْنٰٓى اَنْ تَقَرَّ اَعْيُنُهُنَّ وَلَا يَحْزَنَّ وَيَرْضَيْنَ بِمَآ اٰتَيْتَهُنَّ كُلُّهُنَّ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا فِيْ قُلُوْبِكُمْ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَلِيْمًا ﴿٥١﴾

(आ़रज़ी) कनारा कशी इख़्तियार फ़रमा रखी थी आप उन्हें (अपनी क़ुर्बत के लिए) तलब फ़रमा लें तो आप पर कुछ मुज़ाइक़ा नहीं, येह उसके क़रीबतर है कि उनकी आँखें (आपके दीदारसे) ठंडी होंगी और वोह ग़मगीन नहीं रहेंगी और वोह सब उससे राज़ी रहेंगी जो कुछ आपने उन्हे अ़ता फरमा दिया है और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम्हारे दिलों में है, और अल्लाह ख़ूब जाननेवाला बड़ा हिल्मवाला है।

لَا يَحِلُّ لَكَ النِّسَآءُ مِنْۢ بَعْدُ وَلَآ اَنْ تَبَدَّلَ بِهِنَّ مِنْ اَزْوَاجٍ وَّلَوْ اَعْجَبَكَ حُسْنُهُنَّ اِلَّا مَا مَلَكَتْ يَمِيْنُكَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ رَّقِيْبًا ﴿٥٢﴾ ع ٦ ١٢ ٣

52.इसके बाद (कि उन्होंने दुन्यवी मुन्फ़ेअ़तों पर आपकी रज़ाओ ख़िदमत को तरजीह़ दे दी है) आपके लिए भी और औ़रतें (निकाह़ में लेना) ह़लाल नहीं (ताकि येही अज़वाज अपने शरफ़ में मुमताज़ रहें) और येह भी जाइज़ नहीं कि (बा'ज़की तलाक़ की सूरत में इस अ़दद को हमारा हुक्म समझ कर बरक़रार रखने के लिए) आप उनके बदले दीगर अज़वाज (अ़क़्द में) ले लें अगरचे आपको उनका हुस्ने (सीरतो अख़्लाक और इशाअ़ते दीनका सलीक़ा) कितना ही उमदा लगे मगर जो कनीज़ (हमारे हुक्मसे) आपकी मिल्क में हो (जाइज़ है)और अल्लाह हर चीज़ पर निगेहबान है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَدْخُلُوْا بُيُوْتَ النَّبِيِّ اِلَّآ اَنْ يُّؤْذَنَ لَكُمْ اِلٰى طَعَامٍ غَيْرَ نٰظِرِيْنَ اِنٰىهُ ۙ وَلٰكِنْ اِذَا دُعِيْتُمْ فَادْخُلُوْا فَاِذَا طَعِمْتُمْ فَانْتَشِرُوْا وَلَا مُسْتَاْنِسِيْنَ لِحَدِيْثٍ ؕ اِنَّ ذٰلِكُمْ كَانَ يُؤْذِى النَّبِيَّ فَيَسْتَحْيٖ مِنْكُمْ ۖ وَاللّٰهُ

53. ऐ ईमानवालो ! नबी (मुकर्रम ﷺ) के घरों में दाख़िल न हुआ करो सिवाए इसके कि तुम्हें खाने के लिए इजाज़त दी जाए (फिर वक़्त से पहले पहुंच कर) खाना पकनेका इन्तिज़ार करनेवाले न बना करो, हां जब) तुम बुलाए जाओ तो (उस वक़्त) अंदर आया करो फिर जब खाना खा चुको तो (वहां से उठ कर) फ़ौरन मुन्तशिर हो जाया करो और वहां बातों में दिल लगा कर बैठे रेहनेवाले न बनो । यक़ीनन तुम्हारा ऐसे (देर तक बैठे) रेहना नबिय्ये (अकरम ﷺ) को तक्लीफ़ देता है और वोह तुमसे (उठ जाने का केहते हुए) शरमाते हैं और

لَا يَسْتَحْيٖ مِنَ الْحَقِّ ؕ وَ اِذَا سَاَلْتُمُوْهُنَّ
مَتَاعًا فَسْـَٔلُوْهُنَّ مِنْ وَّرَآءِ
حِجَابٍ ؕ ذٰلِكُمْ اَطْهَرُ لِقُلُوْبِكُمْ وَ
قُلُوْبِهِنَّ ؕ وَ مَا كَانَ لَكُمْ اَنْ تُؤْذُوْا
رَسُوْلَ اللّٰهِ وَ لَاۤ اَنْ تَنْكِحُوْۤا
اَزْوَاجَهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖۤ اَبَدًا ؕ اِنَّ ذٰلِكُمْ
كَانَ عِنْدَ اللّٰهِ عَظِيْمًا ﴿۵۳﴾

अल्लाह हक़ (बात केहने) से नहीं शरमाता, और जब तुम उन (अज़वाजे मुतह्हरात) से कोई सामान मांगो तो उनसे पसे परदा पूछा करो, येह (अदब) तुम्हारे दिलों के लिए और उनके दिलों के लिए बड़ी तहारत का सबब है, और तुम्हारे लिए (हरगिज़ जाइज़) नहीं कि तुम रसूलुल्लाह (ﷺ) को तक्लीफ़ पहुंचाओ और न येह (जाइज़) है कि तुम उनके बाद अबद तक उनकी अज़वाजे (मुतह्हरात) से निकाह़ करो, बेशक येह अल्लाह के नज़दीक बहुत बड़ा (गुनाह) है।

اِنْ تُبْدُوْا شَيْـًٔا اَوْ تُخْفُوْهُ فَاِنَّ
اللّٰهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ﴿۵۴﴾

54. ख़्वाह तुम किसी चीज़को ज़ाहिर करो या उसे छुपाओ बेशक अल्लाह हर चीज़ को खूब जाननेवाला है।

لَا جُنَاحَ عَلَيْهِنَّ فِيْۤ اٰبَآئِهِنَّ وَ لَاۤ
اَبْنَآئِهِنَّ وَ لَاۤ اِخْوَانِهِنَّ وَ لَاۤ اَبْنَآءِ
اِخْوَانِهِنَّ وَ لَاۤ اَبْنَآءِ اَخَوٰتِهِنَّ وَ لَا
نِسَآئِهِنَّ وَ لَا مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُنَّ ۚ
وَ اتَّقِيْنَ اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى
كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدًا ﴿۵۵﴾

55. उन पर (परदा न करने में) कोई गुनाह नहीं अपने (ह़क़ीक़ी) आबाअ से, और न अपने बेटोंसे और न अपने भाइयोंसे, और न अपने भतीजों से और न अपने भांजों से और न अपनी (मुस्लिम) औ़रतों और न अपनी ममलूक बांदियोंसे, तुम अल्लाहका तक्वा (बर क़रार) रखो, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर गवाहो निगेहबान है।

اِنَّ اللّٰهَ وَ مَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى
النَّبِيِّ ؕ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
صَلُّوْا عَلَيْهِ وَ سَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ﴿۵۶﴾

56. बेशक अल्लाह और उसके (सब) फ़रिश्ते नबिय्ये (मुकर्रम ﷺ) पर दुरूद भेजते रेहते हैं, ऐ ईमानवालो ! तुम (भी) उन पर दुरूद भेजा करो और खूब सलाम भेजा करो।

اِنَّ الَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ اللّٰهَ وَ
رَسُوْلَهٗ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فِي الدُّنْيَا وَ

57. बेशक जो लोग अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) को अज़िय्यत देते हैं अल्लाह उन पर दुनिया और आख़िरत

الْاٰخِرَةِ وَاَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُّهِيْنًا ﴿٥٧﴾

में ला'नत भेजता है और उसने उन के लिए ज़िल्लत अंगेज़ अ़ज़ाब तैयार कर रखा है।

وَالَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ
الْمُؤْمِنٰتِ بِغَيْرِ مَا اكْتَسَبُوْا فَقَدِ
احْتَمَلُوْا بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿٥٨﴾ ع

58. और जो लोग मोमिन मर्दों और मोमिन औ़रतों को अज़ि‌य्यत देते हैं बिग़ैर इसके कि उन्होंने कुछ (ख़ता) की हो तो बेशक उन्होंने बोहतान और खुले गुनाह का बोझ (अपने सर) ले लिया।

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ وَ
بَنٰتِكَ وَنِسَآءِ الْمُؤْمِنِيْنَ يُدْنِيْنَ
عَلَيْهِنَّ مِنْ جَلَابِيْبِهِنَّ ؕ ذٰلِكَ
اَدْنٰۤى اَنْ يُّعْرَفْنَ فَلَا يُؤْذَيْنَ ؕ
وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٥٩﴾

59. ऐ नबी ! अपनी बीवियों और अपनी साहिबज़ादियों और मुसलमानों की औ़रतों से फ़रमा दें कि (बाहर निकलते वक़्त)अपनी चादरें अपने ऊपर ओढ़ लिया करें, येह इस बात के क़रीबतर है किवोह पहचान ली जाएं (कि येह पाक दामन आज़ाद औ़रतें हैं) फिर उन्हें (आवारा बांदियां समझ कर ग़ल्ती से) ईज़ा न दी जाए, और अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला बड़ा रह़म फ़रमानेवाला है।

لَئِنْ لَّمْ يَنْتَهِ الْمُنٰفِقُوْنَ وَ
الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّ
الْمُرْجِفُوْنَ فِي الْمَدِيْنَةِ لَنُغْرِيَنَّكَ
بِهِمْ ثُمَّ لَا يُجَاوِرُوْنَكَ فِيْهَاۤ اِلَّا
قَلِيْلًا ۖۚ ﴿٦٠﴾

60. अगर मुनाफ़िक़ लोग और वोह लोग जिनके दिलोंमें (रसूल ﷺ से बुग़्ज़ और गुस्ताख़ी की) बीमारी है, और (इसी तरह) मदीना में झूटी अफ़वाहें फैलानेवाले लोग (रसूल ﷺ को ईज़ा रसानी से) बाज़ न आए तो हम आपको उन पर ज़रूर मुसल्लत कर देंगे फिर वोह मदीना में आपके पड़ोस में न ठेहर सकेंगे मगर थोड़े (दिन)।

مَّلْعُوْنِيْنَ ۛۚ اَيْنَمَا ثُقِفُوْۤا اُخِذُوْا
وَقُتِّلُوْا تَقْتِيْلًا ﴿٦١﴾

61. (येह) ला'नत किए हुए लोग जहां कहीं पाए जाएं, पकड़ लिए जाएं और चुन चुन कर बुरी तरह क़त्ल कर दिए जाएं।

سُنَّةَ اللّٰهِ فِي الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ
قَبْلُ ۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ
تَبْدِيْلًا ﴿٦٢﴾

62. अल्लाह की (येही) सुन्नत उन लोगों में (भी जारी रही) है जो पहले गुज़र चुके हैं, और आप अल्लाहके दस्तूर में हरगिज़ कोई तब्दीली न पाएंगे।

معانقة ١٢

الربع

يَسْـَٔلُكَ النَّاسُ عَنِ السَّاعَةِ ؕ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَمَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ تَكُوْنُ قَرِيْبًا ﴿٦٣﴾

63. लोग आपसे क़ियामत के (वक़्त के) बारे में दर्याफ़्त करते हैं। फ़रमा दीजिए : उसका इ़ल्म तो अल्लाह ही के पास है, और आपको किसने आगाह किया शायद क़ियामत क़रीब ही आ चुकी हो।

اِنَّ اللّٰهَ لَعَنَ الْكٰفِرِيْنَ وَاَعَدَّ لَهُمْ سَعِيْرًا ﴿٦٤﴾ لا

64. बेशक अल्लाहने काफ़िरों पर ला'नत फ़रमाई है और उनके लिए (दोज़ख़ की) भड़कती आग तैयार कर रखी है।

خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۚ لَا يَجِدُوْنَ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿٦٥﴾ ج

65. जिस में वोह हमेशा हमेशा रेहनेवाले हैं। न वोह कोई हिमायती पाएंगे और न मददगार।

يَوْمَ تُقَلَّبُ وُجُوْهُهُمْ فِى النَّارِ يَقُوْلُوْنَ يٰلَيْتَنَآ اَطَعْنَا اللّٰهَ وَاَطَعْنَا الرَّسُوْلَا ﴿٦٦﴾

66. जिस दिन उनके मुंह आतिशे दोज़ख़में (बार बार) उलटाए जाएंगे (तो) वोह कहेंगे : ऐ काश ! हमने अल्लाह की इताअ़त की होती और हमने रसूल (ﷺ) की इताअ़त की होती।

وَقَالُوْا رَبَّنَآ اِنَّآ اَطَعْنَا سَادَتَنَا وَكُبَرَآءَنَا فَاَضَلُّوْنَا السَّبِيْلَا ﴿٦٧﴾

67. और वोह कहेंगे : ऐ हमारे रब ! बेशक हमने अपने सरदारों और अपने बड़ों का कहा माना था तो उन्होंने हमें (सीधी) राह से बेहका दिया।

رَبَّنَآ اٰتِهِمْ ضِعْفَيْنِ مِنَ الْعَذَابِ وَالْعَنْهُمْ لَعْنًا كَبِيْرًا ﴿٦٨﴾ ع

68. ऐ हमारे रब ! उन्हें दोगुना अ़ज़ाब दे और उन पर बहुत बड़ी ला'नत कर।

ع ٨ ١٠ ٥

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ اٰذَوْا مُوْسٰى فَبَرَّاَهُ اللّٰهُ مِمَّا قَالُوْا ؕ وَكَانَ عِنْدَ اللّٰهِ وَجِيْهًا ﴿٦٩﴾ ط

69. ऐ ईमानवालो ! तुम उन लोगोंकी तरह न हो जाना जिन्होंने मूसा (عليه السلام) को (गुस्ताख़ाना कलिमात के ज़रीए) अज़िय्यत पहुंचाई, पस अल्लाहने उन्हें उन बातों से बे ऐब साबित कर दिया जो वोह केहते थे, और वोह (मूसा عليه السلام) अल्लाह के हां बड़ी क़द्रो मन्ज़िलतवाले थे।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ

70. ऐ ईमानवालो ! अल्लाहसे डरा करो और सहीह़ और

وَقُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا ﴿٧٠﴾

सीधी बात कहा करो।

يُّصْلِحْ لَكُمْ اَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ؕ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيْمًا ﴿٧١﴾

71. वोह तुम्हारे लिए तुम्हारे (सारे) आ'माल दुरुस्त फ़रमा देगा और तुम्हारे गुनाह तुम्हारे लिए बख़्श देगा, और जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल ﷺ की फ़रमांबरदारी करता है तो बेशक वोह बड़ी कामयाबी से सरफ़राज़ हुआ।

اِنَّا عَرَضْنَا الْاَمَانَةَ عَلَى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَ الْجِبَالِ فَاَبَيْنَ اَنْ يَّحْمِلْنَهَا وَ اَشْفَقْنَ مِنْهَا وَ حَمَلَهَا الْاِنْسَانُ ؕ اِنَّهٗ كَانَ ظَلُوْمًا جَهُوْلًا ﴿٧٢﴾

72. बेशक हमने (इताअ़त की) अमानत आस्मानों और ज़मीन और पहाड़ों पर पेश की तो उन्होंने उस (बोझ) को उठाने से इन्कार कर दिया और उससे डर गए और इन्सानने उसे उठा लिया, बेशक वोह (अपनी जान पर) बड़ी ज़ियादती करनेवाला (अदायगिए अमानत में कोताही के अंजाम से) बड़ा बेख़बरो नादान है।

لِّيُعَذِّبَ اللّٰهُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْمُشْرِكِيْنَ وَالْمُشْرِكٰتِ وَيَتُوْبَ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٧٣﴾ ع ٩ ٥ ٦

73. (येह) इसलिए कि अल्लाह मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औ़रतों और मुशरिक मर्दों और मुशरिक औ़रतों को अ़ज़ाब दे और अल्लाह मोमिन मर्दों और मोमिन औ़रतोंकी तौबा क़ुबूल फ़रमाए, और अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला बड़ा रह़म फ़रमानेवाला है।

आयातुहा 54 | 34 सूरतु स-बइन मक्किय्यतुन 58 | रुकूआ़तुहा 6

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रह़म फ़रमानेवाला है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِي الْاَرْضِ وَ لَهُ الْحَمْدُ فِي الْاٰخِرَةِ ؕ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ﴿١﴾

1. तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं, जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीनमें है (सब) उसीका है और आख़िरतमें भी ता'रीफ़ उसीके लिए है, और वोह बड़ी ह़िक्मतवाला, ख़बरदार है।

يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي الْاَرْضِ وَ مَا
يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَآءِ
وَمَا يَعْرُجُ فِيْهَا ؕ وَ هُوَ الرَّحِيْمُ
الْغَفُوْرُ ﴿٢﴾

2. वोह उन (सब) चीज़ों को जानता है जो ज़मीनमें दाख़िल होती हैं और जो उसमें से बाहर निकलती हैं और जो आस्मानसे उतरती हैं और जो उसमें चढ़ती हैं, और वोह बहुत रहम फ़रमानेवाला बड़ा बख़्शनेवाला है।

وَ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَاْتِيْنَا
السَّاعَةُ ؕ قُلْ بَلٰى وَ رَبِّيْ
لَتَاْتِيَنَّكُمْ ۙ عٰلِمِ الْغَيْبِ ۚ لَا يَعْزُبُ
عَنْهُ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَ
لَا فِي الْاَرْضِ وَلَاۤ اَصْغَرُ مِنْ ذٰلِكَ
وَلَاۤ اَكْبَرُ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ۙ﴿٣﴾

3. और काफ़िर लोग केहते हैं कि हम पर क़ियामत नहीं आएगी, आप फ़रमा दें : क्यों नहीं? मेरे आ़लिमुल ग़ैब रबकी क़सम वोह तुम पर ज़रूर आएगी, उससे न आस्मानों में ज़र्रा भर कोई चीज़ ग़ाइब हो सक्ती है और न ज़मीन में और न उससे कोई छोटी (चीज़ है) और न बड़ी मगर रौशन किताब (या'नी लौहे मेहफ़ूज़) में (लिखी हूई) है।

لِّيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّ
رِزْقٌ كَرِيْمٌ ﴿٤﴾

4. ताकि अल्लाह उन लोगोंको पूरा बदला अ़ता फ़रमाए जो ईमान लाए और नेक अ़मल करते रहे। येही वोह लोग हैं जिन के लिए बख़्शिश और बुज़ुर्गीवाला (उख़रवी) रिज़्क़ है।

وَالَّذِيْنَ سَعَوْ فِيْۤ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ
اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مِّنْ رِّجْزٍ
اَلِيْمٌ ﴿٥﴾

5. और जिन्होंने हमारी आयतों में (मुख़ालिफ़ाना) कोशिश की (हमें) आ़जिज़ करने के ज़अ़म में उन्हीं लोगों के लिए सख़्त दर्दनाक अ़ज़ाब की सज़ा है।

وَيَرَى الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ الَّذِيْۤ
اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ هُوَ الْحَقَّ ۙ
وَ يَهْدِيْۤ اِلٰى صِرَاطِ الْعَزِيْزِ
الْحَمِيْدِ ﴿٦﴾

6. और ऐसे लोग जिन्हें इ़ल्म दिया गया है वोह जानते हैं कि जो (किताब) आपके रबकी तरफ़ से आपकी जानिब उतारी गई है वोही ह़क़ है और वोह (किताब) इ़ज़्ज़त वाले, सब ख़ूबियोंवाले (रब) की राह की तरफ़ हिदायत करती है।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا هَلْ نَدُلُّكُمْ
عَلٰى رَجُلٍ يُّنَبِّئُكُمْ اِذَا مُزِّقْتُمْ
كُلَّ مُمَزَّقٍ ۙ اِنَّكُمْ لَفِيْ خَلْقٍ
جَدِيْدٍ ۝٧

7. और काफ़िर लोग (तअ़ज्जुबो इस्तेहज़ाकी निय्यतसे) केहते हैं कि क्या हम तुम्हें ऐसे शख़्स का बताएं जो तुम्हें येह ख़बर देता है कि जब तुम (मर कर) बिलकुल रेज़ा रेज़ा हो जाओगे तो यक़ीनन तुम्हें (एक) नई पैदाइश मिलेगी।

اَفْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَمْ بِهٖ جِنَّةٌ ۭ
بَلِ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ
فِي الْعَذَابِ وَالضَّلٰلِ الْبَعِيْدِ ۝٨

8. (या तो) वोह अल्लाह पर झूटा बोहतान बांधता है या उसे जुनून है, (ऐसा कुछ भी नहीं) बल्कि जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते वोह अ़ज़ाब और परले दरजे की गुमराही में (मुब्तिला) हैं।

اَفَلَمْ يَرَوْا اِلٰى مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ
وَمَا خَلْفَهُمْ مِّنَ السَّمَاۗءِ وَالْاَرْضِ ۭ
اِنْ نَّشَاْ نَخْسِفْ بِهِمُ الْاَرْضَ اَوْ
نُسْقِطْ عَلَيْهِمْ كِسَفًا مِّنَ السَّمَاۗءِ ۭ
اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّكُلِّ عَبْدٍ
مُّنِيْبٍ ۝٩ ع

9. सो क्या उन्होंने उन (निशानियों) को नहीं देखा जो आस्मान और ज़मीन से उनके आगे और उनके पीछे (उन्हें घेरे हुए) है। अगर हम चाहें तो उन्हें ज़मीनमें धंसा दें या उन पर आस्मान से कुछ टुकड़े गिरा दें, बेशक उसमें हर उस बंदे के लिए निशानी है जो अल्लाह की तरफ़ रुजूअ़ करनेवाला है।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ مِنَّا فَضْلًا ۭ
يٰجِبَالُ اَوِّبِيْ مَعَهٗ وَالطَّيْرَ ۚ
وَاَلَنَّا لَهُ الْحَدِيْدَ ۝١٠

10. और बेशक हमने दाऊद (عليه السلام) को अपनी बारगाह से बड़ा फ़ज़्ल अ़ता फ़रमाया, (और हुक्म फ़रमाया) ऐ पहाड़ो ! तुम इनके साथ मिल कर खुश इलहानी से (तस्बीह़) पढ़ा करो, और परिन्दों को भी (मुसख़्ख़र कर के येही हुक्म दिया), और हमने उनके लिए लोहा नरम कर दिया।

اَنِ اعْمَلْ سٰبِغٰتٍ وَّقَدِّرْ فِي السَّرْدِ
وَاعْمَلُوْا صَالِحًا ۭ اِنِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ
بَصِيْرٌ ۝١١

11. (और इर्शाद फ़रमाया) कि कुशादह ज़िरहें बनाओ और (उनके) ह़ल्के जोड़नेमें अंदाज़े को मलहूज़ रखो और (ऐ आले दाऊद !) तुम लोग नेक अ़मल करते रहो, मैं उन कामों को जो तुम करते हो खूब देखनेवाला हूं।

12. और सुलैमान (عليه السلام) के लिए (हमने) हवाको (मुसख़्ख़र कर दिया) जिसकी सुब्ह़ की मुसाफ़त एक महीनेकी (राह) थी और उसकी शामकी मुसाफ़त (भी) एक माह की राह होती, और हमने उनके लिए पिघले हुए तांबेका चश्मा बहा दिया, और कुछ जिन्नात (उनके ताबे' कर दिए) थे जो उनके रबके हुक्म से उनके सामने काम करते थे, और (फ़रमा दिया था कि) उनमें से जो कोई हमारे हुक्म से फिरेगा हम उसे दोज़ख़की भड़कती आगका अ़ज़ाब चखाएंगे।

13. वोह (जिन्नात) उनके लिए जो वोह चाहते थे बना देते थे। उनमें बुलंदो बाला क़िल्ए और मुजस्समे और बड़े बड़े लगन थे जो तालाब और लंगर अंदाज देगों की मानिन्द थे। ऐ आले दाऊद! (अल्लाह का) शुक्र बजा लाते रहो, और मेरे बंदों में शुक्र गुज़ार कम ही हुए हैं।

14. फिर जब हमने सुलैमान (عليه السلام) पर मौत का हुक्म सादिर फ़रमा दिया तो उन (जिन्नात) को उनकी मौत पर किसीने आगाही न की सिवाए ज़मीन की दीमक के, जो उनके अ़सा को खाती रही फिर जब आपका जिस्म ज़मीन पर आ गया तो जिन्नात पर ज़ाहिर हो गया कि अगर वोह ग़ैब जानते होते तो इस ज़िल्लत अंगेज अ़ज़ाब में न पड़े रेहते।

15. दर हक़ीक़त (क़ौमे) सबाके लिए उनके वतन ही में निशानी मौजूद थी। (वोह) दो बाग़ थे, दाऐं तरफ़ और बाऐं तरफ़। (उनसे इर्शाद हुवा :) तुम अपने रबके रिज़्क़ से खाया करो और उसका शुक्र बजा लाया करो। (तुम्हारा) शहर (कितना) पाकीज़ा है और रब बड़ा बख़्शनेवाला है।

وَلِسُلَيْمٰنَ الرِّيْحَ غُدُوُّهَا شَهْرٌ وَّ
رَوَاحُهَا شَهْرٌ ۚ وَاَسَلْنَا لَهٗ عَيْنَ
الْقِطْرِ ؕ وَمِنَ الْجِنِّ مَنْ يَّعْمَلُ
بَيْنَ يَدَيْهِ بِاِذْنِ رَبِّهٖ ؕ وَمَنْ
يَّزِغْ مِنْهُمْ عَنْ اَمْرِنَا نُذِقْهُ مِنْ
عَذَابِ السَّعِيْرِ ﴿۱۲﴾
يَعْمَلُوْنَ لَهٗ مَا يَشَآءُ مِنْ
مَّحَارِيْبَ وَتَمَاثِيْلَ وَجِفَانٍ
كَالْجَوَابِ وَقُدُوْرٍ رّٰسِيٰتٍ ؕ
اِعْمَلُوْٓا اٰلَ دَاوٗدَ شُكْرًا ؕ وَقَلِيْلٌ
مِّنْ عِبَادِيَ الشَّكُوْرُ ﴿۱۳﴾
فَلَمَّا قَضَيْنَا عَلَيْهِ الْمَوْتَ مَا دَلَّهُمْ
عَلٰى مَوْتِهٖٓ اِلَّا دَآبَّةُ الْاَرْضِ
تَاْكُلُ مِنْسَاَتَهٗ ۚ فَلَمَّا خَرَّ تَبَيَّنَتِ
الْجِنُّ اَنْ لَّوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ الْغَيْبَ
مَا لَبِثُوْا فِي الْعَذَابِ الْمُهِيْنِ ؕ ﴿۱۴﴾
لَقَدْ كَانَ لِسَبَاٍ فِيْ مَسْكَنِهِمْ اٰيَةٌ ۚ
جَنَّتٰنِ عَنْ يَّمِيْنٍ وَّ شِمَالٍ ۬ ؕ كُلُوْا
مِنْ رِّزْقِ رَبِّكُمْ وَاشْكُرُوْا لَهٗ ؕ
بَلْدَةٌ طَيِّبَةٌ وَّ رَبٌّ غَفُوْرٌ ﴿۱۵﴾

فَاَعْرَضُوْا فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ سَيْلَ
الْعَرِمِ وَبَدَّلْنٰهُمْ بِجَنَّتَيْهِمْ جَنَّتَيْنِ
ذَوَاتَيْ اُكُلٍ خَمْطٍ وَّ اَثْلٍ وَّشَيْءٍ
مِّنْ سِدْرٍ قَلِيْلٍ ﴿١٦﴾

16. फिर उन्होंने (ताअ़त से) मुंह फेर लिया तो हमने उन पर ज़ोरदार सैलाब भेज दिया और हमने उनके दोनों बागों को दो (ऐसे) बाग़ोंसे बदल दिया जिन में बद मज़ा फल और कुछ झाओ और कुछ थोडे बेरी के दरख़्त रेह गए थे।

ذٰلِكَ جَزَيْنٰهُمْ بِمَا كَفَرُوْا ؕ وَهَلْ
نُجٰزِيْٓ اِلَّا الْكَفُوْرَ ﴿١٧﴾

17. येह हमने उन्हें उनके कुफ़्रो नाशुक्री का बदला दिया, और हम बड़े ना शुक्र गुज़ार के सिवा (किसी को ऐसी) सज़ा नहीं देते।

وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ الْقُرَى الَّتِيْ
بٰرَكْنَا فِيْهَا قُرًى ظَاهِرَةً وَّ
قَدَّرْنَا فِيْهَا السَّيْرَ ؕ سِيْرُوْا فِيْهَا
لَيَالِيَ وَاَيَّامًا اٰمِنِيْنَ ﴿١٨﴾

18. और हमने उन बाशिन्दों के और उन बस्तियों के दरमियान जिन में हमने बरकत दे रखी थी, (यमन से शाम तक) नुमायां (और) मुत्तसिल बस्तियां आबाद कर दी थीं, और हमने उनमें आमदो रफ़्त (के दौरान आराम करने) की मन्ज़िलें मुक़र्रर कर रखी थीं कि तुम लोग उनमें रातों को (भी) और दिनों को (भी) बेख़ौफ़ हो कर चलते फिरते रहो।

فَقَالُوْا رَبَّنَا بٰعِدْ بَيْنَ اَسْفَارِنَا
وَظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَجَعَلْنٰهُمْ
اَحَادِيْثَ وَمَزَّقْنٰهُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ ؕ
اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ
شَكُوْرٍ ﴿١٩﴾

19. तो वोह केहने लगे : ऐ हमारे रब ! हमारी मनाज़िले सफ़र के दरमियान फ़ासले पैदा कर दे और उन्होंने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया तो हमने उन्हें (इ़ब्रतके) फ़साने बना दिया और हमने उन्हें टुकड़े टुकड़े कर के मुन्तशिर कर दिया। बेशक उसमें बहुत साबिर और निहायत शुक्र गुज़ार शख़्स के लिए निशानियां हैं।

وَلَقَدْ صَدَّقَ عَلَيْهِمْ اِبْلِيْسُ
ظَنَّهٗ فَاتَّبَعُوْهُ اِلَّا فَرِيْقًا مِّنَ
الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢٠﴾

20. बेशक इब्लीस ने उनके बारे में अपना ख़याल सच कर दिखाया तो उन लोगों ने उसकी पैरवी की बजुज़ एक गिरोह के जो (सह़ीह़) मोमिनीन का था।

وَمَا كَانَ لَهٗ عَلَيْهِمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ
اِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يُّؤْمِنُ بِالْاٰخِرَةِ
مِمَّنْ هُوَ مِنْهَا فِيْ شَكٍّ ؕ وَرَبُّكَ
عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ حَفِيْظٌ ﴿٢١﴾ ع ٢ ١٢ ٨

21. और शैतानका उन पर कुछ ज़ोर न था मगर येह इस लिए (हुवा) कि हम उन लोगोंको जो आख़िरत पर ईमान रखते हैं उन लोगोंसे मुमताज़ कर दें जो उसके बारे में शक में हैं, और आपका रब हर चीज़ पर निगेहबान है।

قُلِ ادْعُوا الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ مِّنْ
دُوْنِ اللّٰهِ ۚ لَا يَمْلِكُوْنَ مِثْقَالَ
ذَرَّةٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْاَرْضِ
وَمَا لَهُمْ فِيْهِمَا مِنْ شِرْكٍ وَّمَا لَهٗ
مِنْهُمْ مِّنْ ظَهِيْرٍ ﴿٢٢﴾

22. फ़रमा दीजिए : तुम उन्हें बुला लो जिन्हें तुम अल्लाहके सिवा (मा'बूद) समझते हो, वोह आस्मानों में ज़र्रा भरके मालिक नहीं हैं और न ज़मीन में, और न उनकी दोनों (ज़मीनो आस्मान) में कोई शराकत है और न उनमें से कोई अल्लाह का मददगार है।

وَلَا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا
لِمَنْ اَذِنَ لَهٗ ؕ حَتّٰۤى اِذَا فُزِّعَ
عَنْ قُلُوْبِهِمْ قَالُوْا مَاذَا ۙ قَالَ
رَبُّكُمْ ؕ قَالُوا الْحَقَّ ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ
الْكَبِيْرُ ﴿٢٣﴾

23. और उसकी बारगाह में शफ़ाअ़त नफ़ा' न देगी सिवाए जिसके ह़क़ में उसने इज़्न दिया होगा, यहां तक कि जब उनके दिलों से घबराहट दूर कर दी जाएगी तो वोह (सवालन) कहेंगे कि तुम्हारे रबने क्या फ़रमाया? वोह (जवाबन) कहेंगे ह़क़ फ़रमाया (या'नी इज़्न दे दिया) और वोही निहायत बुलंद, बहुत बड़ा है।

قُلْ مَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ ؕ قُلِ اللّٰهُ ۙ وَاِنَّاۤ اَوْ
اِيَّاكُمْ لَعَلٰى هُدًى اَوْ فِيْ ضَلٰلٍ
مُّبِيْنٍ ﴿٢٤﴾

24. आप फ़रमाइए : तुम्हें आस्मानों और ज़मीन से रोज़ी कौन देता है, आप (ख़ुद ही) फ़रमा दीजिए कि अल्लाह (देता है) और बेशक हम या तुम ज़रूर हिदायत पर हैं या खुली गुमराही में।

قُلْ لَّا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّاۤ اَجْرَمْنَا وَلَا
نُسْـَٔلُ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٥﴾

25. फ़रमा दीजिए : तुमसे उस जुर्म की बाज़ पुर्स न होगी जो (तुम्हारे गुमान में) हमसे सरज़द हुआ और न हमसे उसका पूछा जाएगा जो तुम करते हो।

قُلْ يَجْمَعُ بَيْنَنَا رَبُّنَا ثُمَّ يَفْتَحُ
بَيْنَنَا بِالْحَقِّ ۭ وَهُوَ الْفَتَّاحُ
الْعَلِيْمُ ﴿٢٦﴾

26. फ़रमा दीजिए : हम सबको हमारा रब (रोज़े क़ियामत) जमा' फ़रमाएगा फिर हमारे दरमियान हक़ के साथ फ़ैसला फ़रमाएगा, और वोह खूब फ़ैसला फ़रमानेवाला खूब जाननेवाला है।

قُلْ اَرُوْنِيَ الَّذِيْنَ اَلْحَقْتُمْ بِهٖ
شُرَكَاۗءَ كَلَّا ۭ بَلْ هُوَ اللّٰهُ الْعَزِيْزُ
الْحَكِيْمُ ﴿٢٧﴾

27. फ़रमा दीजिए : मुझे वोह शरीक दिखाओ जिन्हें तुमने अल्लाह के साथ मिला रखा है हरगिज़ (कोई शरीक) नहीं है बल्कि वोही अल्लाह बड़ी इज़्ज़तवाला, बड़ी हिक्मतवाला है।

وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا كَاۗفَّةً لِّلنَّاسِ
بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَ
النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٨﴾

28. और (ऐ हबीबे मुकर्रम !) हमने आपको नहीं भेजा मगर इस तरह कि (आप) पूरी इन्सानियत के लिए खुशख़बरी सुनानेवाले और डर सुनानेवाले हैं लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते।

وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ
كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٢٩﴾

29. और वोह केहते हैं कि येह वा'दए (आख़िरत) कब पूरा होगा अगर तुम सच्चे हो?

قُلْ لَّكُمْ مِّيْعَادُ يَوْمٍ لَّا تَسْتَاْخِرُوْنَ
عَنْهُ سَاعَةً وَّلَا تَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿٣٠﴾ ع ٣ النصف

30. फ़रमा दीजिए : तुम्हारे लिए वा'दे का दिन मुक़र्रर है न तुम उस से एक घड़ी पीछे रहोगे और न आगे बढ़ सकोगे।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ بِهٰذَا
الْقُرْاٰنِ وَلَا بِالَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ ۭ وَلَوْ
تَرٰٓى اِذِ الظّٰلِمُوْنَ مَوْقُوْفُوْنَ عِنْدَ
رَبِّهِمْ ښ يَرْجِعُ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضِ
ۨ الْقَوْلَ ۚ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا
لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا لَوْلَآ اَنْتُمْ لَكُنَّا
مُؤْمِنِيْنَ ﴿٣١﴾

31. और काफ़िर लोग केहते हैं कि हम इस कुरआन पर हरगिज़ ईमान नहीं लाएंगे और न उस (वह़ी) पर जो इस से पहले उतर चुकी, और अगर आप देखें जब ज़ालिम लोग अपने रब के हुज़ूर खड़े किए जाएंगे (तो क्या मन्ज़र होगा) कि उनमें से हर एक (अपनी) बात फेर कर दूसरे पर डाल रहा होगा, कमज़ोर लोग मु-त-कब्बिरों से कहेंगे : अगर तुम न होते तो हम ज़रूर ईमान ले आते।

قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْٓا اَنَحْنُ صَدَدْنٰكُمْ عَنِ الْهُدٰى بَعْدَ اِذْ جَآءَكُمْ بَلْ كُنْتُمْ مُّجْرِمِيْنَ ﴿٣٢﴾

32. मु-त-कब्बिर लोग कमज़ोरों से कहेंगे : क्या हमने तुम्हें हिदायत से रोका इस के बाद कि वोह तुम्हारे पास आ चुकी थी, बल्कि तुम खुद ही मुजरिम थे।

وَقَالَ الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا بَلْ مَكْرُ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ اِذْ تَاْمُرُوْنَنَآ اَنْ نَّكْفُرَ بِاللّٰهِ وَ نَجْعَلَ لَهٗٓ اَنْدَادًا ؕ وَ اَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ ؕ وَ جَعَلْنَا الْاَغْلٰلَ فِيْٓ اَعْنَاقِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ هَلْ يُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٣٣﴾

33. फिर कमज़ोर लोग मु-त-कब्बिरों से कहेंगे : बल्कि (तुम्हारे) रात दिन के मक्र ही ने (हमें रोका था) जब तुम हमें हुक्म देते थे कि हम अल्लाहसे कुफ़्र करें और हम उस के लिए शरीक ठेहराएं, और वोह (एक दूसरे से) नदामत छुपाएंगे जब वोह अ़ज़ाब देख लेंगे और हम काफ़िरोंकी गरदनों में तौक़ डाल देंगे, और उन्हें उनके किए का ही बदला दिया जाएगा।

وَمَآ اَرْسَلْنَا فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّذِيْرٍ اِلَّا قَالَ مُتْرَفُوْهَآ ۙ اِنَّا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿٣٤﴾

34. और हमने किसी बस्ती में कोई डर सुनानेवाला नहीं भेजा मगर येह कि वहां के खुशहाल लोगों ने (हमेशा येही) कहा कि तुम जो (हिदायत) दे कर भेजे गए हो हम उस के मुन्किर हैं।

وَقَالُوْا نَحْنُ اَكْثَرُ اَمْوَالًا وَّ اَوْلَادًا ۙ وَّمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ ﴿٣٥﴾

35. और उन्होंने कहा कि हम मालो औलाद में बहुत ज़ियादह हैं और हम पर अ़ज़ाब नहीं किया जाएगा।

قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَ يَقْدِرُ وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٦﴾ ع ٤ ٦ ١٠

36. फ़रमा दीजिए, मेरा रब जिसके लिए चाहता है रिज़्क़ कुशादह फ़रमा देता है और (जिसके लिए चाहता है) तंग कर देता है लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते।

وَمَآ اَمْوَالُكُمْ وَ لَآ اَوْلَادُكُمْ
بِالَّتِيْ تُقَرِّبُكُمْ عِنْدَنَا زُلْفٰٓى اِلَّا
مَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ۪ فَاُولٰٓئِكَ
لَهُمْ جَزَآءُ الضِّعْفِ بِمَا عَمِلُوْا
وَهُمْ فِي الْغُرُفٰتِ اٰمِنُوْنَ ﴿٣٧﴾

37. और न तुम्हारे माल इस क़ाबिल हैं और न तुम्हारी औलाद कि तुम्हें हमारे हुज़ूर क़ुर्ब और नज़दीकी दिला सकें मगर जो ईमान लाया और उसने नेक अ़मल किए, पस ऐसे ही लोगों के लिए दोगुना अज्र है उनके अ़मल के बदले में और वोह (जन्नत के) बालाख़ानों में अम्नो अमान से होंगे।

وَالَّذِيْنَ يَسْعَوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا
مُعٰجِزِيْنَ اُولٰٓئِكَ فِي الْعَذَابِ
مُحْضَرُوْنَ ﴿٣٨﴾

38. और जो लोग हमारी आयतों में (मुख़ालिफ़ाना) कोशिश करते हैं (हमें) आ़जिज़ करने के गुमान में, वोही लोग अ़ज़ाबमें ह़ाज़िर किए जाएंगे।

قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ
يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَ يَقْدِرُ لَهٗ ؕ
وَ مَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَهُوَ
يُخْلِفُهٗ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿٣٩﴾

39. फ़रमा दीजिए : बेशक मेरा रब अपने बंदों में से जिस के लिए चाहता है रिज़्क़ कुशादह फ़रमा देता है और जिस के लिए (चाहता है) तंग कर देता है, और तुम (अल्लाह की राह में) जो कुछ भी ख़र्च करोगे तो वोह उस के बदले में और देगा और वोह सबसे बेहतर रिज़्क़ देनेवाला है।

وَ يَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ يَقُوْلُ
لِلْمَلٰٓئِكَةِ اَهٰٓؤُلَآءِ اِيَّاكُمْ كَانُوْا
يَعْبُدُوْنَ ﴿٤٠﴾

40. और जिस दिन वोह सब को एक साथ जमा' करेगा फिर फ़रिश्तों से इर्शाद फ़रमाएगा क्या येही लोग हैं जो तुम्हारी इ़बादत किया करते थे?

قَالُوْا سُبْحٰنَكَ اَنْتَ وَلِيُّنَا مِنْ
دُوْنِهِمْ ۚ بَلْ كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ الْجِنَّ ۚ
اَكْثَرُهُمْ بِهِمْ مُّؤْمِنُوْنَ ﴿٤١﴾

41. वोह अ़र्ज़ करेंगे : तू पाक है तू ही हमारा दोस्त है न कि येह लोग, बल्कि येह लोग जिन्नातकी पूजा किया करते थे, उन में से अक्सर उन्हीं पर ईमान रखनेवाले हैं।

فَالْيَوْمَ لَا يَمْلِكُ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ
نَّفْعًا وَّلَا ضَرًّا ؕ وَ نَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ

42. पस आजके दिन तुम में से कोई न एक दूसरे के नफ़े' का मालिक है और न नुक़्सान का, और हम

ظَلَمُوْا ذُوْقُوْا عَذَابَ النَّارِ الَّتِیْ كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ ﴿۴۲﴾

ज़ालिमों से कहेंगे : दोज़ख़ के अ़ज़ाब का मज़ा चखो जिसे तुम झुटलाया करते थे।

وَ اِذَا تُتْلٰى عَلَیْهِمْ اٰیٰتُنَا بَیِّنٰتٍ قَالُوْا مَا هٰذَاۤ اِلَّا رَجُلٌ یُّرِیْدُ اَنْ یَّصُدَّكُمْ عَمَّا كَانَ یَعْبُدُ اٰبَآؤُكُمْ ۚ وَ قَالُوْا مَا هٰذَاۤ اِلَّاۤ اِفْكٌ مُّفْتَرًى ؕ وَ قَالَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ ۙ اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِیْنٌ ﴿۴۳﴾

43. और जब उन पर हमारी रौशन आयतें पढ़ कर सुनाई जाती हैं तो वोह केहते हैं : येह (रसूल ﷺ) तो एक ऐसा शख़्स है जो तुम्हें सिर्फ़ उन (बुतों) से रोकना चाहता है जिनकी तुम्हारे बापदादा पूजा किया करते थे, और येह (भी) केहते हैं कि येह (क़ुरआन) महज़ मन घड़त बोहतान है, और काफ़िर लोग उस हक़ (या'नी क़ुरआन) से मुतअ़ल्लिक़ जब कि वोह उनके पास आ चुका है, येह भी केहते हैं कि येह तो महज़ खुला जादू है।

وَ مَاۤ اٰتَیْنٰهُمْ مِّنْ كُتُبٍ یَّدْرُسُوْنَهَا وَ مَاۤ اَرْسَلْنَاۤ اِلَیْهِمْ قَبْلَكَ مِنْ نَّذِیْرٍ ﴿۴۴﴾ ؕ

44. और हमने उन (अहले मक्का) को न आस्मानी किताबें अ़ता की थीं जिन्हें येह लोग पढ़ते हों और न ही आपसे पहले उनकी तरफ़ कोई डर सुनानेवाला भेजा था।

وَ كَذَّبَ الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۙ وَ مَا بَلَغُوْا مِعْشَارَ مَاۤ اٰتَیْنٰهُمْ فَكَذَّبُوْا رُسُلِیْ ۫ فَكَیْفَ كَانَ نَكِیْرِ ﴿۴۵﴾ ع ۵ ۱۱

45. और इन से पहले लोगोंने भी (हक़ को) झुटलाया था और येह उसके दसवें हिस्से को भी नहीं पहुंचे जो कुछ हमने उन (पहले गुजरे हुओं) को दिया था फिर उन्होंने (भी) मेरे रसूलों को झुटलाया, सो मेरा इन्कार कैसा (इ़ब्रतनाक साबित) हुआ।

قُلْ اِنَّمَاۤ اَعِظُكُمْ بِوَاحِدَةٍ ۚ اَنْ تَقُوْمُوْا لِلّٰهِ مَثْنٰى وَ فُرَادٰى ثُمَّ تَتَفَكَّرُوْا ۫ مَا بِصَاحِبِكُمْ مِّنْ جِنَّةٍ ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا نَذِیْرٌ لَّكُمْ بَیْنَ یَدَیْ

46. फ़रमा दीजिए : मैं तुम्हें बस एक ही (बात की) नसीहत करता हूं कि तुम अल्लाह के लिए (रूहानी बेदारी और इन्तिबाह के हाल में) क़ियाम करो, दो दो और एक एक फिर तफ़क्कुर करो (या'नी हक़ीक़त का मुआइना और मुराक़बा करो तो तुम्हें मुशाहिदा हो जाएगा) कि तुम्हें शरफ़े सोहबत से नवाज़नेवाले (रसूले मुकर्रम ﷺ)

عَذَابٍ شَدِيْدٍ ﴿٤٦﴾

हरगिज़ जुनून ज़दह नहीं हैं वोह तो सख़्त अ़ज़ाब (के आने) से पहले तुम्हें (बर वक़्त) डर सुनानेवाले हैं (ताकि तुम गफ़लत से जाग उठो)।

قُلْ مَا سَاَلْتُكُمْ مِّنْ اَجْرٍ فَهُوَ لَكُمْ ؕ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ﴿٤٧﴾

47. फ़रमा दीजिए : मैंने (उस एह़सान का) जो सिला तुमसे मांगा हो वोह भी तुम ही को दे दिया, मेरा अज्र सिर्फ़ अल्लाह ही के ज़िम्मे है और वोह हर चीज़ पर निगेहबान है।

قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَقْذِفُ بِالْحَقِّ ۚ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ﴿٤٨﴾

48. फ़रमा दीजिए : मेरा रब (अंबिया की तरफ़) ह़क़ का इल्क़ा फ़रमाता है (वोह) सब गैबों को खूब जाननेवाला है।

قُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَمَا يُبْدِئُ الْبَاطِلُ وَمَا يُعِيْدُ ﴿٤٩﴾

49. फ़रमा दीजिए : ह़क़ आ गया है, और बातिल न (कुछ) पेहली बार पैदा कर सक्ता है और न दोबारा पलटा सक्ता है।

قُلْ اِنْ ضَلَلْتُ فَاِنَّمَآ اَضِلُّ عَلٰى نَفْسِيْ ۚ وَاِنِ اهْتَدَيْتُ فَبِمَا يُوْحِيْٓ اِلَيَّ رَبِّيْ ؕ اِنَّهٗ سَمِيْعٌ قَرِيْبٌ ﴿٥٠﴾

50. फ़रमा दीजिए : अगर मैं बहक जाऊं तो मेरे बहेकने का गुनाह (या नुक़्सान) मेरी अपनी ही ज़ात पर है, और अगर मैंने हिदायत पा ली है तो इस वजह से (पाई है)कि मेरा रब मेरी तरफ़ वही भेजता है। बेशक वोह सुननेवाला है क़रीब है।

وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ فَزِعُوْا فَلَا فَوْتَ وَاُخِذُوْا مِنْ مَّكَانٍ قَرِيْبٍ ﴿٥١﴾

51. और अगर आप (उनका ह़ाल) देखें जब येह लोग बड़े मुज़्तरिब होंगे, फिर बच न सकेंगे और नज़दीकी जगह से ही पकड़ लिए जाएंगे।

وَّقَالُوْٓا اٰمَنَّا بِهٖ ۚ وَاَنّٰى لَهُمُ التَّنَاوُشُ مِنْ مَّكَانٍۢ بَعِيْدٍ ﴿٥٢﴾

52. और कहेंगे : हम उस पर ईमान ले आए हैं, मगर अब वोह (ईमान को इतनी) दूर की जगह से कहां पा सक्ते हैं।

وَّقَدْ كَفَرُوْا بِهٖ مِنْ قَبْلُ ۚ وَيَقْذِفُوْنَ بِالْغَيْبِ مِنْ مَّكَانٍۢ بَعِيْدٍ ﴿٥٣﴾

53. ह़ालांकि वोह उससे पहले कुफ़्र कर चुके, और वोह बिन देखे दूर की जगह से बातिल गुमान के तीर फेंकते रहे हैं।

وَحِيْلَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ مَا يَشْتَهُوْنَ كَمَا فُعِلَ بِاَشْيَاعِهِمْ مِّنْ قَبْلُ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا فِيْ شَكٍّ مُّرِيْبٍ ﴿٥٤﴾ ع ٦ ٩ ١٢

54. और उनके और उनकी ख़्वाहिशात के दरमियान रुकावट डाल दी गई जैसा कि पहले उनके मिस्ल गिरोहों के साथ किया गया था। बेशक वोह धोके में डालनेवाले शक में मुब्तिला थे।

आयातुहा 45 | 35 सूरतु फातिरिन मक्किय्यतुन 43 | रुकूआ़तुहा 5

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रह़म फ़रमानेवाला है

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ جَاعِلِ الْمَلٰٓئِكَةِ رُسُلًا اُولِيْٓ اَجْنِحَةٍ مَّثْنٰى وَثُلٰثَ وَرُبٰعَ ؕ يَزِيْدُ فِي الْخَلْقِ مَا يَشَآءُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١﴾

1. तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं जो आस्मानों और ज़मीन (की तमाम वुस्अ़तों) को पैदा फ़रमानेवाला है, फ़रिश्तों को जो दो-दो और तीन-तीन और चार-चार परोंवाले हैं, क़ासिद बनानेवाला है, और तख़्लीक़ में जिस क़दर चाहता है इज़ाफ़ा (और तौसीअ़) फ़रमाता रेहता है, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर बड़ा क़ादिर है।

مَا يَفْتَحِ اللّٰهُ لِلنَّاسِ مِنْ رَّحْمَةٍ فَلَا مُمْسِكَ لَهَا ۚ وَمَا يُمْسِكْ ۙ فَلَا مُرْسِلَ لَهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖ ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٢﴾

2. अल्लाह इन्सानों के लिए (अपने ख़ज़ानए) रह़मत से जो कुछ खोल दे तो उसे कोई रोकनेवाला नहीं है, और जो रोक ले तो उसके बाद कोई उसे छोड़नेवाला नहीं, और वोही ग़ालिब है बड़ी ह़िक्मतवाला है।

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ ؕ هَلْ مِنْ خَالِقٍ غَيْرُ اللّٰهِ يَرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ؕ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۖ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ﴿٣﴾

3. ऐ लोगो! अपने ऊपर अल्लाहके इन्आ़म को याद करो, क्या अल्लाह के सिवा कोई और ख़ालिक़ है जो तुम्हें आस्मान और ज़मीन से रोज़ी दे, उसके सिवा कोई मा'बूद नहीं, पस तुम कहां बेहके फिरते हो।

وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كُذِّبَتْ

4. और अगर वोह आपको झुटलाएं तो आपसे पहले

رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ ؕ وَ اِلَى اللّٰهِ
تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ﴿۴﴾

कितने ही रसूल झुटलाए गए, और तमाम काम अल्लाह ही की तरफ़ लौटाए जाएंगे।

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ
فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ٚ وَ لَا
يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ﴿۵﴾

5. ऐ लोगो ! बेशक अल्लाहका वा'दा सच्चा है सो दुनिया की ज़िन्दगी तुम्हें हरगिज़ फ़रेब न दे दे, और न वोह दग़ाबाज़ शैतान तुम्हें अल्लाह (के नाम) से धोका दे।

اِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوْهُ
عَدُوًّا ؕ اِنَّمَا يَدْعُوْا حِزْبَهٗ لِيَكُوْنُوْا
مِنْ اَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ؕ ﴿۶﴾

6. बेशक शैतान तुम्हारा दुश्मन है सो तुम भी (उसकी मुख़ालिफ़त की शक्ल में) उसे दुश्मन ही बनाए रखो, वोह तो अपने गिरोह को सिर्फ़ इस लिए बुलाता है कि वोह दोज़ख़ियों में शामिल हो जाएं।

اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ عَذَابٌ
شَدِيْدٌ ۬ؕ وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ
عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّ
اَجْرٌ كَبِيْرٌ ﴿۷﴾

7. काफ़िर लोगों के लिए सख़्त अ़ज़ाब है, और जो लोग ईमान लाए और नेक आ'माल करते रहे उनके लिए मग़फ़िरत और बहुत बड़ा सवाब है।

اَفَمَنْ زُيِّنَ لَهٗ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ فَرَاٰهُ
حَسَنًا ؕ فَاِنَّ اللّٰهَ يُضِلُّ مَنْ
يَّشَآءُ وَ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ۖ فَلَا
تَذْهَبْ نَفْسُكَ عَلَيْهِمْ حَسَرٰتٍ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ ﴿۸﴾

8. भला जिस शख़्स के लिए उसका बुरा अ़मल आरास्ता कर दिया गया हो और वोह उसे (ह़क़ीक़तन) अच्छा समझने लगे (क्या वोह मोमिने सालेह़ जैसा हो सक्ता है), सो बेशक अल्लाह जिसे चाहता है गुमराह ठेहरा देता है और जिसे चाहता है हिदायत फ़रमाता है, सो (ऐ जाने जहां !) उन पर ह़सरत और फ़र्ते ग़म में आपकी जान न जाती रहे, बेशक वोह जो कुछ सर अंजाम देते हैं अल्लाह उसे खूब जाननेवाला है।

وَ اللّٰهُ الَّذِيْۤ اَرْسَلَ الرِّيٰحَ فَتُثِيْرُ
سَحَابًا فَسُقْنٰهُ اِلٰى بَلَدٍ مَّيِّتٍ
فَاَحْيَيْنَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ

9. और अल्लाह ही है जो हवाएं भेजता है तो वोह बादल को उभार कर इकठ्ठा करती हैं फिर हम उस (बादल) को खुश्क और बंजर बस्ती की तरफ़ सैराबी के लिऐ ले जाते हैं, फिर हम उसके जरीए उस ज़मीनको उसकी मुर्दनी के

كَذٰلِكَ النُّشُوْرُ ۝٩

बाद ज़िन्दगी अ़ता करते हैं, उसी तरह (मुर्दों का) जी उठना होगा।

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْعِزَّةَ فَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ جَمِيْعًا ؕ اِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّيِّبُ وَالْعَمَلُ الصَّالِحُ يَرْفَعُهٗ ؕ وَالَّذِيْنَ يَمْكُرُوْنَ السَّيِّاٰتِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ؕ وَمَكْرُ اُولٰٓئِكَ هُوَ يَبُوْرُ ۝١٠

10. जो शख़्स इ़ज़्ज़त चाहता है तो अल्लाह ही के लिए सारी इ़ज़्ज़त है, पाकीज़ा कलिमात उसी की तरफ़ चढ़ते हैं और वोही नेक अ़मल (के मदारिज) को बुलंद फ़रमाता है, और जो लोग बुरी चालों में लगे रेहते हैं उनके लिए सख़्त अ़ज़ाब है और उनका मक्रो फ़रेब नीस्तो नाबूद हो जाएगा।

وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ جَعَلَكُمْ اَزْوَاجًا ؕ وَمَا تَحْمِلُ مِنْ اُنْثٰى وَلَا تَضَعُ اِلَّا بِعِلْمِهٖ ؕ وَمَا يُعَمَّرُ مِنْ مُّعَمَّرٍ وَّلَا يُنْقَصُ مِنْ عُمُرِهٖٓ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ۝١١

11. और अल्लाह ही ने तुम्हें मिट्टी (या'नी ग़ैर नामी मादे) से पैदा फ़रमाया फिर एक तौलीदी क़त्रे से, फिर तुम्हें जोड़े, जोड़े बनाया, और कोई मादा ह़ामिला नहीं होती और न बच्चा जनती है मगर उसके इ़ल्म से, और न किसी दराज़ उ़म्र शख़्स की उ़म्र बढ़ाई जाती है और न उसकी उ़म्र कम की जाती है मगर (येह सब कुछ) लौह़े (मह़फ़ूज़) में है, बेशक येह अल्लाह पर बहुत आसान है।

وَمَا يَسْتَوِي الْبَحْرٰنِ ۖ هٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ سَآئِغٌ شَرَابُهٗ وَهٰذَا مِلْحٌ اُجَاجٌ ؕ وَمِنْ كُلٍّ تَاْكُلُوْنَ لَحْمًا طَرِيًّا وَّتَسْتَخْرِجُوْنَ حِلْيَةً تَلْبَسُوْنَهَا ۚ وَتَرَى الْفُلْكَ فِيْهِ مَوَاخِرَ لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝١٢

12. और दो समन्दर (या दरिया) बराबर नहीं हो सक्ते, येह (एक) शीरीं, प्यास बुझानेवाला है, उसका पीना खुशगवार है और येह (दूसरा) खारी, सख़्त कड़वा है, और तुम हर एकसे ताज़ा गोश्त खाते हो, और ज़ेवर (जिन में मोती, मरजान और मूंगे वग़ैरा सब शामिल हैं) निकालते हो, जिन्हें तुम पहनते हो और तू उसमें कश्तियों (और जहाज़ों) को देखता है जो (पानी को) फाड़ते चले जाते हैं ताकि तुम (बह़री तिजारत के रास्तों से) उसका फ़ज़्ल तलाश कर सको और ताकि तुम शुक्र गुज़ार हो जाओ।

يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ ۙ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ

13. वोह रातको दिन में दाख़िल फ़रमाता है और दिनको रात में दाख़िल फ़रमाता है और उसने सूरज और चांदको

وَ الْقَمَرَ ۖ كُلٌّ يَّجْرِیْ لِاَجَلٍ
مُّسَمًّى ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ
الْمُلْكُ ؕ وَ الَّذِیْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ
دُوْنِهٖ مَا یَمْلِكُوْنَ مِنْ قِطْمِیْرٍ ﴿۱۳﴾

(एक निज़ाम के तहत) मुसख़्ख़र फ़रमा रखा है, हर कोई एक मुक़र्रर मीआ़द के मुताबिक़ ह़रकत पज़ीर है। येही अल्लाह तुम्हारा रब है उसीकी सारी बादशाहत है, और उसके सिवा तुम जिन बुतोंको पूजते हो वोह खजूर की गुठली के बारीक छिलके के (भी) मालिक नहीं हैं।

اِنْ تَدْعُوْهُمْ لَا یَسْمَعُوْا
دُعَآءَكُمْ ۚ وَ لَوْ سَمِعُوْا مَا
اسْتَجَابُوْا لَكُمْ ؕ وَ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ
یَكْفُرُوْنَ بِشِرْكِكُمْ ؕ وَ لَا یُنَبِّئُكَ
مِثْلُ خَبِیْرٍ ﴿۱۴﴾

14. (ऐ मुशरिको !) अगर तुम उन्हें पुकारो तो वोह (बुत हैं) तुम्हारी पुकार नहीं सुन सक्ते और अगर (बिल फ़र्ज़) वोह सुन लें तो तुम्हें जवाब नहीं दे सक्ते, और क़ियामत के दिन वोह तुम्हारे शिर्क का बिलकुल इन्कार कर देंगे, और तुझे ख़ुदाए बा ख़बर जैसा कोई ख़बरदार न करेगा।

یٰۤاَیُّهَا النَّاسُ اَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ اِلَى
اللّٰهِ ۚ وَ اللّٰهُ هُوَ الْغَنِیُّ الْحَمِیْدُ ﴿۱۵﴾

15. ऐ लोगो ! तुम सब अल्लाह के मोहताज हो और अल्लाह ही बे नियाज़, सज़ावारे ह़म्दो सना है।

اِنْ یَّشَاْ یُذْهِبْكُمْ وَ یَاْتِ بِخَلْقٍ
جَدِیْدٍ ﴿۱۶﴾

16. अगर वोह चाहे तुम्हें नाबूद कर दे और नई मख़्लूक़ ले आए।

وَ مَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِیْزٍ ﴿۱۷﴾

17. और येह अल्लाह पर कुछ मुश्किल नहीं है।

وَ لَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ؕ وَ
اِنْ تَدْعُ مُثْقَلَةٌ اِلٰى حِمْلِهَا لَا
یُحْمَلْ مِنْهُ شَیْءٌ وَّ لَوْ كَانَ
ذَا قُرْبٰى ؕ اِنَّمَا تُنْذِرُ الَّذِیْنَ
یَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَیْبِ وَ اَقَامُوا
الصَّلٰوةَ ؕ وَ مَنْ تَزَكّٰى فَاِنَّمَا یَتَزَكّٰى
لِنَفْسِهٖ ؕ وَ اِلَى اللّٰهِ الْمَصِیْرُ ﴿۱۸﴾

18. और कोई बोझ उठानेवाला दूसरे का बारे (गुनाह) न उठा सकेगा, और कोई बोझ में दबा हुआ (दूसरे को) अपना बोझ बटाने के लिए बुलाएगा तो उससे कुछ भी बोझ न उठाया जा सकेगा ख़्वाह क़रीबी रिश्तेदार ही हो, (ऐ ह़बीब !) आप उन्ही लोगों को डर सुनाते हैं जो अपने रबसे बिन देखे डरते हैं और नमाज़ क़ाइम करते हैं, और जो कोई पाकीज़गी ह़ासिल करता है वोह अपने ही फ़ाइदे के लिए पाक होता है, और अल्लाह ही की तरफ़ पलट कर जाना है।

وَمَا يَسْتَوِي الْأَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ۙ ﴿١٩﴾

19. और अँधा और बीना बराबर नहीं हो सक्ते।

وَلَا الظُّلُمٰتُ وَلَا النُّوْرُ ۙ ﴿٢٠﴾

20. और न तारीकियां और न नूर (बराबर हो सक्ते हैं)।

وَلَا الظِّلُّ وَلَا الْحَرُوْرُ ۚ ﴿٢١﴾

21. और न साया और न धूप।

وَمَا يَسْتَوِي الْأَحْيَآءُ وَلَا
الْأَمْوَاتُ ۗ إِنَّ اللّٰهَ يُسْمِعُ مَنْ
يَّشَآءُ ۚ وَمَآ أَنْتَ بِمُسْمِعٍ مَّنْ
فِي الْقُبُوْرِ ﴿٢٢﴾

22. और न ज़िन्दा लोग और न मुर्दे बराबर हो सक्ते हैं, बेशक अल्लाह जिसे चाहता है सुना देता है, और आपके ज़िम्मे उनको सुनाना नहीं जो क़ब्रों में (मद्फ़ून) हैं (या'नी आप काफ़िरों से अपनी बात कुबूल करवाने के ज़िम्मेदार नहीं हैं)।

إِنْ أَنْتَ إِلَّا نَذِيْرٌ ﴿٢٣﴾

23. आप तो फ़क़त डर सुनानेवाले हैं।

إِنَّآ أَرْسَلْنٰكَ بِالْحَقِّ بَشِيْرًا وَّ
نَذِيْرًا ۗ وَإِنْ مِّنْ أُمَّةٍ إِلَّا خَلَا
فِيْهَا نَذِيْرٌ ﴿٢٤﴾

24. बेशक हमने आपको हक़्क़ो हिदायत के साथ, ख़ुशख़बरी सुनानेवाला और (आख़िरत का) डर सुनाने वाला बना कर भेजा है। और कोई उम्मत (ऐसी) नहीं मगर उसमें कोई (न कोई) डर सुनानेवाला (ज़रूर) गुज़रा है।

وَإِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كَذَّبَ
الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ جَآءَتْهُمْ
رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ وَبِالزُّبُرِ
وَبِالْكِتٰبِ الْمُنِيْرِ ﴿٢٥﴾

25. और अगर येह लोग आपको झुटलाएं तो बेशक इनसे पहले लोग (भी) झुटला चुके हैं, उनके पास (भी) उनके रसूल वाज़ेह निशानियां और सहीफ़े और रौशन करनेवाली किताब ले कर आए थे।

ثُمَّ أَخَذْتُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿٢٦﴾ ع ٣ ١٢ ١٥

26. फिर मैंने उन काफ़िरों को (अज़ाबमें) पकड़ लिया सो मेरा इन्कार (किया जाना) कैसा (इब्रतनाक) साबित हुआ।

★ यहां पर मन फ़िल क़ुबूरि (क़ब्रों में मदफून मुर्दों) से मुराद काफ़िर हैं। अइम्मए तफ़्सीरने सहाबा व ताबिईन ؓ से येही मा'ना बयान किया है। बतौरे हवाला मुलाहिज़ा फ़रमाएं : तफ़्सीरुल बग़वी (569:3), ज़ादुल मसीर लिइब्निल जौज़ी (484:7), तफ़्सीरुल क़रतबी (340:14), तफ़्सीरुल ख़ाज़िन (498:3), तफ़्सीर इब्ने कसीर (553:3), तफ़्सीरुल लिबाब लि अबी हफ़्स अल हंबली (200:199:15), अद्दुर्रुल मनसूर लिस्सुयूती (18:7), और फ़त्हुल क़दीर लिश्शौकानी (346:4)

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ
مَآءً ۚ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ ثَمَرٰتٍ مُّخْتَلِفًا
اَلْوَانُهَا ؕ وَمِنَ الْجِبَالِ جُدَدٌۢ
بِيْضٌ وَّ حُمْرٌ مُّخْتَلِفٌ اَلْوَانُهَا
وَغَرَابِيْبُ سُوْدٌ ﴿۲۷﴾

27. क्या आपने नहीं देखा कि अल्लाहने आस्मानसे पानी उतारा, फिर हमने उससे फल निकाले जिनके रंग जुदागाना हैं, और (उसी तरह) पहाड़ों में भी सफ़ेद और सुर्ख़ घाटियां हैं उनके रंग (भी) मुख़्तलिफ़ हैं और बहुत गेहरी सियाह (घाटियां) भी हैं।

وَمِنَ النَّاسِ وَالدَّوَآبِّ وَالْاَنْعَامِ
مُخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ كَذٰلِكَ ؕ اِنَّمَا
يَخْشَى اللّٰهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُا ؕ
اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ غَفُوْرٌ ﴿۲۸﴾

28. और इन्सानों और जानवरों और चोपायों में भी उसी तरह मुख़्तलिफ़ रंग है, बस अल्लाह के बंदों में से उससे वोही डरते हैं जो (उन हक़ाइक़ का बसीरत के साथ) इल्म रखनेवाले हैं, यक़ीनन अल्लाह ग़ालिब है बड़ा बख़्शने वाला है।

اِنَّ الَّذِيْنَ يَتْلُوْنَ كِتٰبَ اللّٰهِ وَ
اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَ اَنْفَقُوْا مِمَّا
رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً يَّرْجُوْنَ
تِجَارَةً لَّنْ تَبُوْرَ ﴿۲۹﴾

29. बेशक जो लोग अल्लाहकी किताब की तिलावत करते हैं और नमाज़ क़ाइम रखते हैं और जो कुछ हमने उन्हें अ़ता किया है उसमें से ख़र्च करते हैं, पोशीदा भी और ज़ाहिर भी, और ऐसी (उख़रवी) तिजारत के उम्मीदवार हैं जो कभी ख़सारे में नहीं होगी।

لِيُوَفِّيَهُمْ اُجُوْرَهُمْ وَ يَزِيْدَهُمْ
مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّهٗ غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ﴿۳۰﴾

30. ताकि अल्लाह उनका अज्र उन्हें पूरा पूरा अ़ता फ़रमाए और अपने फ़ज़्लसे उन्हें मज़ीद नवाज़े, बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला , बड़ा ही शुक्र क़ुबूल फ़रमानेवाला है।

وَالَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ مِنَ الْكِتٰبِ
هُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ بِعِبَادِهٖ لَخَبِيْرٌۢ بَصِيْرٌ ﴿۳۱﴾

31. और जो किताब (क़ुरआन) हमने आपकी तरफ़ वही फ़रमाई है, वोही हक़ है और अपने से पहले की किताबोंकी तस्दीक़ करनेवाली है, बेशक अल्लाह अपने बंदोंसे पूरी तरह बा ख़बर है ख़ूब देखनेवाला है।

ثُمَّ اَوْرَثْنَا الْكِتٰبَ الَّذِيْنَ
اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا ۚ فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ

32. फिर हमने इस किताब (क़ुरआन) का वारिस ऐसे लोगों को बनाया जिन्हें हमने अपने बंदों में से चुन लिया

لِّنَفْسِهٖ ۚ وَ مِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ ۚ وَ
مِنْهُمْ سَابِقٌۢ بِالْخَيْرٰتِ بِاِذْنِ
اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيْرُ ؕ ﴿۳۲﴾

(या'नी उम्मते मुहम्मदी ﷺ को सो उन में से अपनी जान पर ज़ुल्म करनेवाले भी हैं, और उनमें से दरमियान में रेहनेवाले भी हैं, और उनमें से अल्लाह के हुक्म से नेकियों में आगे बढ़ जानेवाले भी हैं, येही (आगे निकल कर कामिल हो जाना ही) बड़ा फ़ज़्ल है।

جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا يُحَلَّوْنَ
فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّ
لُؤْلُؤًا ۚ وَ لِبَاسُهُمْ فِيْهَا حَرِيْرٌ ﴿۳۳﴾

33. (दाइमी इक़ामत के लिए) अ़दन की जन्नतें हैं जिन में वोह दाख़िल होंगे, उनमें उन्हें सोने और मोतियों के कंगनों से आरास्ता किया जाएगा और वहां उनकी पोशाक रेश्मी होगी।

وَ قَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْۤ اَذْهَبَ
عَنَّا الْحَزَنَ ؕ اِنَّ رَبَّنَا لَغَفُوْرٌ
شَكُوْرُ ۙ ﴿۳۴﴾

34. और वोह कहेंगे अल्लाह का शुक्रो ह़म्द है जिसने हमसे कुल ग़म दूर फ़रमा दिया, बेशक हमारा रब बड़ा बख़्शानेवाला , बड़ा शुक्र क़ुबूल फ़रमानेवाला है।

الَّذِيْۤ اَحَلَّنَا دَارَ الْمُقَامَةِ مِنْ
فَضْلِهٖ ۚ لَا يَمَسُّنَا فِيْهَا نَصَبٌ وَّ لَا
يَمَسُّنَا فِيْهَا لُغُوْبٌ ﴿۳۵﴾

35. जिसने हमें अपने फ़ज़्ल से दाइमी इक़ामत के घर ला उतारा है, जिसमें हमें न कोई मशक़्क़त पहुंचेगी और न उसमें हमें कोई थकन पहुंचेगी।

وَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ نَارُ جَهَنَّمَ ۚ
لَا يُقْضٰى عَلَيْهِمْ فَيَمُوْتُوْا وَ لَا
يُخَفَّفُ عَنْهُمْ مِّنْ عَذَابِهَا ؕ كَذٰلِكَ
نَجْزِيْ كُلَّ كَفُوْرٍ ۚ ﴿۳۶﴾

36. और जिन लोगोंने कुफ़्र किया उनके लिए दोज़ख़की आग है, न उन पर (मौत का) फ़ैसला किया जाएगा कि मर जाएं और न उनसे अ़ज़ाब में से कुछ कम किया जाएगा, उसी तरह़ हम हर ना फ़रमान को बदला दिया करते हैं।

وَ هُمْ يَصْطَرِخُوْنَ فِيْهَا ۚ رَبَّنَاۤ
اَخْرِجْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا غَيْرَ الَّذِيْ
كُنَّا نَعْمَلُ ؕ اَوَ لَمْ نُعَمِّرْكُمْ مَّا
يَتَذَكَّرُ فِيْهِ مَنْ تَذَكَّرَ وَ

37. और वोह उस दोज़ख़ में चिल्लाएंगे कि ऐ हमारे रब! हमें (यहां से) निकाल दे, (अब) हम नेक अ़मल करेंगे उन (आ'माल) से मुख़्तलिफ़ जो हम (पहले) किया करते थे। (इर्शाद होगा) क्या हमने तुम्हें इतनी उ़म्र नहीं दी थी कि उसमें जो शख़्स नसीह़त ह़ासिल करना चाहता,

جَآءَكُمُ النَّذِيرُ ۖ فَذُوقُوا فَمَا
لِلظّٰلِمِينَ مِن نَّصِيرٍ ﴿٣٧﴾

वोह सोच सक्ता था और (फिर) तुम्हारे पास डर सुनानेवाला भी आ चुका था, पस अब (अ़ज़ाब का) मज़ा चखो सो ज़ालिमों के लिए कोई मददगार न होगा।

إِنَّ اللّٰهَ عٰلِمُ غَيْبِ السَّمٰوٰتِ
وَالْأَرْضِ ۚ إِنَّهُ عَلِيمٌۢ بِذَاتِ
الصُّدُورِ ﴿٣٨﴾

38. बेशक अल्लाह आस्मानों और ज़मीन के ग़ैब को जाननेवाला है, यक़ीनन वोह सीनोंकी (पोशीदा) बातों से ख़ूब वाक़िफ़ है।

هُوَ الَّذِي جَعَلَكُمْ خَلٰٓئِفَ فِي
الْأَرْضِ ۚ فَمَن كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهُ ۖ
وَلَا يَزِيدُ الْكٰفِرِينَ كُفْرُهُمْ عِندَ
رَبِّهِمْ إِلَّا مَقْتًا ۖ وَلَا يَزِيدُ
الْكٰفِرِينَ كُفْرُهُمْ إِلَّا خَسَارًا ﴿٣٩﴾

39. वोही है जिसने तुम्हें ज़मीनमें (गुज़िश्ता अक़्वाम का) जा नशीन बनाया, पस जिसने कुफ़्र किया सो उसका वबाले कुफ़्र उसी पर होगा, और काफ़िरों के ह़क़में उनका कुफ़्र उनके रब के हुज़ूर सिवाए नाराज़गी के और कुछ नहीं बढ़ाता, और काफ़िरों के ह़क़में उनका कुफ़्र सिवाए नुक़्सान के किसी (भी) और चीज़का इज़ाफ़ा नहीं करता।

قُلْ أَرَءَيْتُمْ شُرَكَآءَكُمُ الَّذِينَ
تَدْعُونَ مِن دُونِ اللّٰهِ ۖ أَرُونِي
مَاذَا خَلَقُوا مِنَ الْأَرْضِ أَمْ لَهُمْ
شِرْكٌ فِي السَّمٰوٰتِ ۚ أَمْ آتَيْنٰهُمْ
كِتٰبًا فَهُمْ عَلٰى بَيِّنَتٍ مِّنْهُ ۚ بَلْ
إِن يَعِدُ الظّٰلِمُونَ بَعْضُهُم بَعْضًا
إِلَّا غُرُورًا ﴿٤٠﴾

40. फ़रमा दीजिए : क्या तुमने अपने शरीकों को देखा है जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो, मुझे दिखा दो कि उन्होंने ज़मीन में से क्या चीज़ पैदा की है या आस्मानों (की तख़्लीक़) में उनकी कोई शराकत है या हमने उन्हें कोई किताब अ़ता कर रखी है कि वोह उसकी दलील पर क़ाइम हैं? (कुछ भी नहीं है) बल्कि ज़ालिम लोग एक दूसरे से फ़रेब के सिवा कोई वा'दा नहीं करते।

إِنَّ اللّٰهَ يُمْسِكُ السَّمٰوٰتِ
وَالْأَرْضَ أَن تَزُولَا ۚ وَلَئِن
زَالَتَآ إِنْ أَمْسَكَهُمَا مِنْ أَحَدٍ مِّنۢ

41. बेशक अल्लाह आस्मानों और ज़मीनको (अपने निज़ामे क़ुदरत के ज़रीए) उस बातसे रोके हुए है कि वोह (अपनी अपनी जगहों और रास्तों से) हट सकें और अगर वोह दोनों हटने लगें तो उसके बाद कोई भी उन दोनों को रोक नहीं सक्ता, बेशक वोह बड़ा बुर्दबार,

بَعْدِهٖ ؕ اِنَّهٗ كَانَ حَلِيْمًا غَفُوْرًا ﴿۴۱﴾

बड़ा बख़्शनेवाला है।

وَ اَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَآءَهُمْ نَذِيْرٌ لَّيَكُوْنُنَّ اَهْدٰى مِنْ اِحْدَى الْاُمَمِ ۚ فَلَمَّا جَآءَهُمْ نَذِيْرٌ مَّا زَادَهُمْ اِلَّا نُفُوْرًا ﴿۴۲﴾

42. और येह लोग अल्लाहके साथ बड़ी पुख़्ता क़स्में खाया करते थे कि अगर उनके पास कोई डर सुनानेवाला आ जाए तो येह ज़रूर हर एक उम्मतसे बढ़ कर राहे रास्त पर होंगे, फिर जब उनके पास डर सुनानेवाले (नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां ﷺ) तशरीफ़ ले आए तो उससे उनकी हक़से बेज़ारी में इज़ाफ़ा ही हुआ।

اسْتِكْبَارًا فِي الْاَرْضِ وَ مَكْرَ السَّيِّئِ ؕ وَ لَا يَحِيْقُ الْمَكْرُ السَّيِّئُ اِلَّا بِاَهْلِهٖ ؕ فَهَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا سُنَّتَ الْاَوَّلِيْنَ ۚ فَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ۚ وَ لَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللّٰهِ تَحْوِيْلًا ﴿۴۳﴾

43. (उन्होंने) ज़मीनमें अपने आपको सबसे बड़ा समझना और बुरी चालें चलना (इख़्तियार किया), और बुरी चालें उसी चाल चलनेवाले को ही घेर लेती हैं, सो येह अगले लोगों की रविशे (अ़ज़ाब) के सिवा (किसी और चीज़के) मुन्तज़िर नहीं हैं। सो आप अल्लाहके दस्तूर में हरगिज़ कोई तब्दीली नहीं पाएंगे और न ही अल्लाह के दस्तूर में हरगिज़ कोई फिरना पाएंगे।

اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَ كَانُوْٓا اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً ؕ وَ مَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعْجِزَهٗ مِنْ شَيْءٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَ لَا فِي الْاَرْضِ ؕ اِنَّهٗ كَانَ عَلِيْمًا قَدِيْرًا ﴿۴۴﴾

44. क्या येह लोग ज़मीन में चलते फिरते नहीं हैं कि देख लेते कि उन लोगोंका अंजाम कैसा हुआ जो इनसे पहले थे हालांकि वोह इनसे कहीं ज़ियादह ज़ोर आवर थे, और अल्लाह ऐसा नहीं है कि आस्मानो में कोई भी चीज़ उसे आ़जिज़ कर सके और न ही ज़मीनमें (ऐसी कोई चीज़ है), बेशक वोह बहुत इ़ल्मवाला बड़ी क़ुदरतवाला है।

وَ لَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِمَا كَسَبُوْا مَا تَرَكَ عَلٰى ظَهْرِهَا مِنْ دَآبَّةٍ وَّ

45. और अगर अल्लाह लोगोंको उन आ'माले (बद) के बदले जो उन्होंने कमा रखे हैं (अ़ज़ाबकी) गिरफ़्त में लेने

لٰكِنۡ يُّؤَخِّرُهُمۡ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ
فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمۡ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ
بِعِبَادِهٖ بَصِيۡرًا ﴿٤٥﴾

लगे तो वोह उस ज़मीनकी पुश्त पर किसी चलने वालेको न छोड़े लेकिन वोह उन्हें मुक़र्ररा मुद्दत तक मोहलत दे रहा है। फिर जब उनका मुक़र्ररा वक़्त आ जाएगा तो बेशक अल्लाह अपने बंदों को ख़ूब देखनेवाला है।

आयातुहा 83	36 सूरतु यासीन मक्कियुतुन 41	रुकूआतुहा 5

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रह़म फ़रमानेवाला है।

يٰسٓ ۚ ﴿١﴾

1. यासीन (ह़क़ीक़ी मा'ना अल्लाह और रसूल ﷺ ही बेहतर जानते हैं)।

وَالۡقُرۡاٰنِ الۡحَكِيۡمِ ۙ ﴿٢﴾

2. ह़िक्मत से मा'मूर क़ुरआन की क़सम।

اِنَّكَ لَمِنَ الۡمُرۡسَلِيۡنَ ۙ ﴿٣﴾

3. बेशक आप ज़रूर रसूलों में से हैं।

عَلٰى صِرَاطٍ مُّسۡتَقِيۡمٍ ؕ ﴿٤﴾

4. सीधी राह पर (क़ाइम हैं)।

تَنۡزِيۡلَ الۡعَزِيۡزِ الرَّحِيۡمِ ۙ ﴿٥﴾

5. (येह) बड़ी इ़ज़्ज़तवाले, बड़े रह़मवाले (रब) का नाज़िल कर्दह है।

لِتُنۡذِرَ قَوۡمًا مَّاۤ اُنۡذِرَ اٰبَآؤُهُمۡ
فَهُمۡ غٰفِلُوۡنَ ﴿٦﴾

6. ताकि आप उस क़ौम को डर सुनाएं जिन के बापदादा को (भी) नहीं डराया गया सो वोह ग़ाफ़िल हैं।

لَقَدۡ حَقَّ الۡقَوۡلُ عَلٰٓى اَكۡثَرِهِمۡ
فَهُمۡ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ ﴿٧﴾

7. दर ह़क़ीक़त उनके अक्सर लोगों पर हमारा फ़रमान (सच) साबित हो चुका है सो वोह ईमान नहीं लाएंगे।

اِنَّا جَعَلۡنَا فِىۡۤ اَعۡنَاقِهِمۡ اَغۡلٰلًا فَهِىَ
اِلَى الۡاَذۡقَانِ فَهُمۡ مُّقۡمَحُوۡنَ ﴿٨﴾

8. बेशक हमने उनकी गरदनों में तौक़ डाल दिए हैं तो वोह उनकी ठोड़ियों तक हैं, पस वोह सर ऊपर उठाए हुए हैं।

وَجَعَلۡنَا مِنۡۢ بَيۡنِ اَيۡدِيۡهِمۡ سَدًّا وَّ
مِنۡ خَلۡفِهِمۡ سَدًّا فَاَغۡشَيۡنٰهُمۡ فَهُمۡ

9. और हमने उनके आगे से (भी) एक दीवार और उनके पीछे से (भी) एक दीवार बना दी है, फिर हम ने उन (की

لَا يُبْصِرُوْنَ ۝٩

आँखों) पर परदा डाल दिया है सो वोह कुछ नहीं देखते।

وَ سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ ءَاَنْذَرْتَهُمْ اَمْ
لَمْ تُنْذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝١٠

10. और उन पर बराबर है ख़्वाह आप उन्हें डराएं या उन्हें न डराएं वोह ईमान न लाएंगे।

اِنَّمَا تُنْذِرُ مَنِ اتَّبَعَ الذِّكْرَ وَ
خَشِيَ الرَّحْمٰنَ بِالْغَيْبِ ۚ فَبَشِّرْهُ
بِمَغْفِرَةٍ وَّ اَجْرٍ كَرِيْمٍ ۝١١

11. आप तो सिर्फ़ उसी शख़्स को डर सुनाते हैं जो नसीहत की पैरवी करता है और ख़ुदाए रह्मान से बिन देखे डरता है, सो आप उसे बख़्शिश और बड़ी इज़्ज़तवाले अज्र की ख़ुशख़बरी सुना दें।

اِنَّا نَحْنُ نُحْيِ الْمَوْتٰى وَ نَكْتُبُ مَا
قَدَّمُوْا وَ اٰثَارَهُمْ ؕ وَ كُلَّ شَيْءٍ
اَحْصَيْنٰهُ فِيْٓ اِمَامٍ مُّبِيْنٍ ۝١٢ ع ١٢ ١٨ وقف غفران

12. बेशक हम ही तो मुर्दों को ज़िन्दा करते हैं और हम वोह सब कुछ लिख रहे हैं जो (आ'माल) वोह आगे भेज चुके हैं, और उनके असरात (जो पीछे रेह गए हैं), और हर चीज़को हमने रौशन किताब (लौहे मह्फ़ूज) में इह़ाता कर रखा है।

وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا اَصْحٰبَ الْقَرْيَةِ ۘ
اِذْ جَآءَهَا الْمُرْسَلُوْنَ ۝١٣ وقف لازم

13. और आप उनके लिए एक बस्ती (इन्ताकिया) के बाशिन्दोंकी मिसाल (ह़िकायतन) बयान करें, जब उनके पास कुछ पयग़म्बर आए।

اِذْ اَرْسَلْنَآ اِلَيْهِمُ اثْنَيْنِ
فَكَذَّبُوْهُمَا فَعَزَّزْنَا بِثَالِثٍ فَقَالُوْٓا
اِنَّآ اِلَيْكُمْ مُّرْسَلُوْنَ ۝١٤

14. जबकि हमने उनकी तरफ़ (पहले) दो (पयग़म्बर) भेजे तो उन्होंने उन दोनों को झुटला दिया फिर हमने (उनको) तीसरे (पयग़म्बर) के ज़रीए कुव्वत दी, फिर उन तीनोंने कहा बेशक हम तुम्हारी तरफ़ भेजे गए हैं।

قَالُوْا مَآ اَنْتُمْ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ۙ وَ
مَآ اَنْزَلَ الرَّحْمٰنُ مِنْ شَيْءٍ ۙ اِنْ
اَنْتُمْ اِلَّا تَكْذِبُوْنَ ۝١٥

15. (बस्तीवालों ने) कहा : तुम तो मह़ज़ हमारी तरह बशर हो और ख़ुदाए रह्माननने कुछ भी नाज़िल नहीं किया, तुम फ़क़त झूट बोल रहे हो।

قَالُوْا رَبُّنَا يَعْلَمُ اِنَّآ اِلَيْكُمْ
لَمُرْسَلُوْنَ ۝١٦

16. (पयग़म्बरों ने) कहा : हमारा रब जानता है कि हम यक़ीनन तुम्हारी तरफ़ भेजे गए हैं।

وَمَا عَلَيْنَآ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿١٧﴾

17. और वाज़ेह़ तौर पर पैग़ाम पहुंचा देने के सिवा हम पर कुछ लाज़िम नहीं है।

قَالُوْٓا اِنَّا تَطَيَّرْنَا بِكُمْ ۚ لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهُوْا لَنَرْجُمَنَّكُمْ وَلَيَمَسَّنَّكُمْ مِّنَّا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٨﴾

18. (बस्तीवालों ने) कहा : हमें तुमसे नहूसत पहुंची है अगर तुम वाक़ई बाज़ न आए तो हम तुम्हें यक़ीनन संगसार कर देंगे और हमारी तरफ़ से तुम्हें ज़रूर दर्दनाक अ़ज़ाब पहुंचेगा।

قَالُوْا طَآئِرُكُمْ مَّعَكُمْ ۭ اَئِنْ ذُكِّرْتُمْ ۭ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُوْنَ ﴿١٩﴾

19. (पयग़म्बरों ने) कहा : तुम्हारी नहूसत तुम्हारे साथ है, क्या येह नहूसत है कि तुम्हें नसीह़त की गई, बल्कि तुम लोग ह़द से गुज़र जानेवाले हो।

وَجَآءَ مِنْ اَقْصَا الْمَدِيْنَةِ رَجُلٌ يَّسْعٰى قَالَ يٰقَوْمِ اتَّبِعُوا الْمُرْسَلِيْنَ ۙ﴿٢٠﴾

20. और शहरके परले किनारे से एक आदमी दौड़ता हुवा आया, उसने कहा : ऐ मेरी क़ौम! तुम पयग़म्बरों की पैरवी करो।

اتَّبِعُوْا مَنْ لَّا يَسْـَٔلُكُمْ اَجْرًا وَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿٢١﴾

21. ऐसे लोगोंकी पैरवी करो जो तुमसे कोई मुआ़वज़ा नहीं मांगते और वोह हिदायत याफ़्ता हैं।